



प्रसाद के नाटकों में राष्ट्रीयता का स्वरूप

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ की एम० फिल० उपाधि
के लिए प्रस्तुत

लघु शोध प्रबन्ध

१९७७

निर्देशक :

डा० कुंवरपालसिंह

एम० ए०, पी-एच० डी०

रीडर

हिन्दी विभाग

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय

अलीगढ़ ।

प्रस्तुतकर्त्री :

प्रभा चौहान

एम० ए० (हिन्दी)



Red In Computer



DS233

DS 233

CHECKED 2002

[Handwritten signature]

प्रभाव के नाटकों में राष्ट्रीयता का स्वरूप

सूचिका

प्राक्कथन

कथाय १ राष्ट्र

कथाय २ प्रभावयुगीन परिस्थितियाँ

कथाय ३ भारतीययुगीन राष्ट्रीयता

कथाय ४ प्रभाव के नाटकों में राष्ट्रीयता का स्वरूप

उपसंहार

प्राक्कथन

हिन्दी साहित्य के मुख्य नाटककार श्री जयशंकर प्रसाद का नाट्य-रचना काल बीसवीं शताब्दी का पूर्वार्ध था, जबकि भारत पराधीनता के बन्धन में ग्रस्त मुक्ति के लिए प्रयत्नशील था। उनके नाटकों का वातावरण प्राचीन होते हुए भी तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन से पूर्ण प्रभावित है। प्रसाद ने अपने युग की समूची राष्ट्रीय चेतना को वात्मसात् करके ऐतिहासिक सन्दर्भों में प्रत्यक्षित कर प्रातिशील दृष्टिकोण का परिचय दिया है। उन्होंने अपनी नाटकों द्वारा पराधीन व ह्रासोन्मुख भारतीयों को एक नवीन जागृति का संदेश दिया। बुद्धि तथा भावना से समन्वित उनकी ऐतिहासिक नाट्य रचनाएँ इतिहास, धर्म, दर्शन, संस्कृति, विज्ञान, कला, राजनीति, समाज, तथ्य तथा मनोविज्ञान का अनुपम संगम स्थल है।

बीसवीं शती के पूर्वार्ध में भारतीय राष्ट्रवाद महात्मा गांधी से अत्यधिक प्रभावित था। प्रसाद ने बुद्ध तथा गांधी के समन्वित वाध्यात्मिक जीवन दर्शन को दृष्टि पथ में रख कर प्रेम तथा करुणा को लोक जीवन तथा लोक संस्कृति के व्यापक धरातल पर प्रस्तुत करके तत्कालीन संस्कृतिक तथा राष्ट्रीय चेतना को सम्पूर्ण अभिव्यक्ति दी है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में प्रसाद के प्रमुख ऐतिहासिक नाटकों में यत्र तत्र बिखरे राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के भावनात्मक सूत्रों को गुम्फित करने का तुल्य प्रयास किया गया है।

प्रथम अध्याय में विषय के स्पष्टीकरण के लिए विद्वानों द्वारा उद्धृत परिभाषाओं के आधार पर राष्ट्र तथा राष्ट्रियता का स्वरूप निरूपित करके राष्ट्रियता के उद्भावक विभिन्न तत्वों का उल्लेख किया गया है।

ब्रिटिश शासन के वन्तर्गत उत्पन्न जीवन की नवीन परिस्थितियों से तत्कालीन साहित्य प्रभावित रहा है।

द्वितीय अध्याय के वन्तर्गत उन परिस्थितियों का उल्लेख किया गया है जिनमें राष्ट्रिय चेतना के विकास में विशेष योगदान दिया है।

भारतेन्दु युग से आधुनिक हिन्दी नाटक साहित्य राष्ट्रिय चेतना से सम्पृक्त था। यह निर्विवाद है कि हिन्दी नाटकों में राष्ट्रिय भावना को सर्वप्रथम स्थान देने का श्रेय भारतेन्दु को है। तृतीय अध्याय में भारतेन्दु युगीन नवजात राष्ट्रिय चेतना पर एक विहंगम दृष्टिपात किया गया है।

प्रसाद के ऐतिहासिक नाटक तत्कालीन राष्ट्रिय आन्दोलन से पूर्णतः प्रभावित हैं तथा उनके नाटकों में युगीन राष्ट्रिय चेतना के व्यापक स्वरूप वर्णित हुआ है। चतुर्थ अध्याय में प्रसाद के प्रमुख ऐतिहासिक नाटकों में प्रतिबिम्बित राष्ट्रियता के स्वरूप का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

प्रसाद के नाटक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर
बाधारित होते हुए भी आधुनिक राष्ट्रीय भावना के प्रबल पोषक हैं।
उन्होंने तत्कालीन राष्ट्रीयता को युगानुरूप अभिव्यक्ति प्रदान कर भावी
राष्ट्रीयता के विकास का पथ प्रस्तुत किया है।

मैं अपने निर्देशक माननीय डा० कृष्णपाल सिंह
के प्रति अदावत हूँ, जिनके सम्यक् निर्देशन तथा सतत प्रोत्साहन के फल-
स्वरूप यह लघु शोध प्रबन्ध पूर्ण हुआ। मैं श्री गोपाल शर्मा के प्रति
हादिक वामाद व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने समुचित पथ निर्दिष्ट किया।

Babha Chauhan

प्रभा चौहान

क्याय - १

राष्ट्र

राष्ट्रीयता

राष्ट्रीयता के तत्त्व

- १- भौगोलिक स्मृता
- २- सांस्कृतिक स्मृतन
- ३- ऐतिहासिक परम्परा
- ४- राजनैतिक स्मृता
- ५- वार्थिक स्मृता
- ६- भाषात्मक स्मृता
- ७- जातीय स्मृता
- ८- धार्मिक स्मृता

राष्ट्रीयता वीर देश-प्रेम

वाधुनिक भारतीय राष्ट्रियता का प्रादुर्भाव

निष्कर्ष

राष्ट्र

राष्ट्रशब्द प्रमुख रूप से राजनीति से सम्बन्ध रखता है। जीवन रक्षा तथा प्राप्ति के लिए जिस राजनैतिक शक्ति की आवश्यकता अनुभव हुई, उसने ही सच्चे अर्थों में राष्ट्र की भावना को जन्म दिया। किसी राज्य में सुसंगठित समाज, जिसके रीति-रिवाज, धर्म-विश्वास, तथा सुख-दुःख की चेतना समान हो, राष्ट्र कहलाता है।

राजनीति शास्त्र के विभिन्न पाश्चात्य विद्वानों ने 'राष्ट्र' को परिभाषित किया है। जे० डब्लू० बर्गस ने भाषा एवं साहित्य, रीति-रिवाज तथा मते बुरे की चेतना तथा भौगोलिक चेतना संयुक्त जन समुदाय को राष्ट्र निर्माण का कारण बताया है।^१ राष्ट्र वह जन समुदाय है जो ऐतिहासिक दृष्टि से विकसित और स्थायी होने के साथ साथ सर्वसामान्य भाषा, धर्म भाग, वार्षिक जीवन और संस्कृति में परिलक्षित होने वाली विशेष मनोरचना से युक्त हो।^२ उक्त कथन

१- पोलिटिकल साइंस एण्ड कंस्टीट्यूशनल ला - पृ० १

२- "ए नेशन इज ए हिस्टोरिकली क्वालिफाइड, स्टेबल कम्युनिटी वाफ लैंग्वेज, टेरिटरी, क्वांटिफिकेड साइकलोजिकल मैक अप मेनिफेस्टेड इन ए कम्युनिटी वाफ कल्चर।"

- स्टालिन : मार्क्सिज्म एण्ड दि वैडिङ्गन वाफ

नेशनैलिटीज पृ० ६

में भाषा, भूभाग, वार्षिक जीवन तथा संस्कृति में निर्दिष्ट मनोभावना का स्थायित्व राष्ट्र की स्थापना के तत्त्व निर्धारित किए गए हैं।

राष्ट्र की रचना में ऐतिहासिक रूप से स्थायी तथा प्रगतिशील सार्वजनिक भाषा, भूभाग, समान वार्षिक जीवन, संस्कृति, समान मानसिक वैचारिक भूमि तथा सम्यक्ता का विशेष योग है। वस्तुतः जन कथवा जाति के संगठन को जो परम्परागत समाज, भाषा, इतिहास कथवा विविध राजनीतिक भाषाओं द्वारा विकसित होता है, राष्ट्र कहते हैं।

संक्षेप में राष्ट्र शब्द का प्रयोग एक ऐसे समुदाय के लिए किया जाता है, जिसमें निम्नलिखित विशेषताएँ हों :

१- एक समान शासन तन्त्र का भाव, चाहे वह वर्तमान या अतीत में वास्तविक रूप में रहा हो या भविष्य की एक वाक्यांश के रूप में हो ।

२- समुदाय का एक समुचित वाक्य हो और उसके व्यक्तियों में पारस्परिक सम्बन्ध गहन हो ।

३- प्रायः निश्चित भू भाग हो ।

४- कतिपय विशिष्टताएँ (अधिकतर भाषा) जो उसे अन्य राष्ट्रों या अंतर राष्ट्रीय समुदायों से पूर्ण प्रदर्शित कर सकें ।

१- २० वारं दसहं : सोशल बैंक ग्राउण्ड वाफ इंडियन नेशनलिज्म

५- किसी हद तक एक सामान्य भावना और वाक्यांश हो जिसके कारण लोगों के सामने अपने राष्ट्र की एक तस्वीर हो ।

प्रस्तुत परिभाषा राष्ट्र के नियोजक लगभग सभी तत्वों को वात्पसात् किए हुए उसके सर्वांगीण स्वरूप को स्पष्ट करने में पूर्ण बहायक है। अपने देश के प्रति विशिष्ट वात्पीयता व गौरव की भावना से युक्त व्यक्तियों का समुदाय ही राष्ट्र है।

प्रो० सुधीन्द्र भूमि, भूमिवासी, जन और जन-संस्कृति के संगठन को राष्ट्र नाम से अभिविहित करते हैं, " भूमि, भूमि-वासी-जन और जन संस्कृति तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है। भूमि अर्थात् भौगोलिक एकता, जन अर्थात् जनगण की राजनीतिक एकता जन संस्कृति अर्थात् सांस्कृतिक एकता तीनों के समुच्चय का नाम राष्ट्र है। " वे आगे लिखते हैं- " भूमि उसका (राष्ट्र) का कलेवर है, जन उसका प्राण है और संस्कृति उसका मानस है। " वे राष्ट्र को एक जीवन्त सत्ता मानते हैं।

वस्तुतः अन्य सामाजिक षटनाओं की तरह राष्ट्र ऐतिहासिक वातावरण की उपज है। यह राष्ट्रीयता सामूहिक जीवन की एक निश्चित विकास की स्थिति में, जब अंतः सर्व बाह्य सामाजिक-ऐतिहासिक परिस्थितियाँ परिपक्व होती हैं, सामाजिक परिवेश में उद्भूत होती हैं----- सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास की निश्चित

१- ए० आर० देसाई- सोशल कैब्रिग्राउण्ड ऑफ इंडियन नेशनलिज्म पृ० २
हं० एच० कार का उद्धरण ।

२- हिन्दी कविता में युगान्तर पृ० २२६

३- " " " पृ० २३२

स्थिति में राष्ट्र अस्तित्व को प्राप्त करता है।

राष्ट्र के निर्माणक तत्त्व विभिन्न होते हैं-

भाषा, धर्म, प्राकृतिक परिवेश, संस्कृति, जाति, सम्यक्ता, परम्पराएँ आदि। किसी एक तत्त्व को ही राष्ट्र निर्माणक ऋण नहीं माना जा सकता। राष्ट्र के स्वरूप को निर्धारित करने के लिए कुछ अनिवार्य तत्त्व भी हैं जिनमें धर्म, संस्कृति, भाषा जनता तथा राजनैतिक विचार प्रमुख हैं। कभी किसी युग विशेष में कोई तत्त्व प्रधान तथा प्रभावशाली हो जाता है तो दूसरे युग विशेष में कोई दूसरा तत्त्व। जिसके परिणाम-स्वरूप राष्ट्रीयता के बाह्य स्वरूप और उसकी अभिव्यक्ति में अन्तर आ जाता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ऐतिहासिक घटनाओं के उतार-चढ़ाव की अनुकूल तथा प्रतिकूल परिस्थितियों के सन्दर्भ में राष्ट्र निर्माणक तत्त्व परिवर्तनशील होते हैं, किन्तु फिर भी राष्ट्रीयता के स्थायी तत्वों में भौगोलिकता, जनता, इतिहास एवं संस्कृति प्रमुख हैं। जब कभी व्यक्ति राष्ट्रवादी बनता है, तब राष्ट्र के समस्त तत्वों से प्रेम करता है तथा वर्तमान को ही नहीं अतीत को भी प्रेम और भ्रष्टा की दृष्टि से देखता है। प्राचीन ऐतिहासिक संस्कृतिक परम्पराओं का अध्ययन करके उन्हें समयानुकूल बनाना तथा वर्तमान समय में मूल्यांकन करना राष्ट्रीयता का ऋण होता है।

राष्ट्रीयता

राष्ट्र के प्रति तीव्र अफसर्ष एवं समर्ष की भावना

ही राष्ट्रीयता की उद्भासिका है। जिसका मनुष्य की वैश्वरूपिता से गहन सम्बन्ध है। साहित्य में राष्ट्रीयता से तात्पर्य केवल स्वदेश पर रचित साहित्य से नहीं, बल्कि उस सम्पूर्ण साहित्य से है, जिसकी प्रेरणा उस देश की भूमि और परिवेश से ग्रहीत हो तथा जिसमें समस्त राष्ट्र के स्फूर्ति तथा उन्नति की सीमावर्ती सम्निविष्ट हो। अतः राष्ट्रीयता वह मनःस्थिति है जिसमें व्यक्ति की सर्वोच्च निष्ठा राष्ट्र अथवा राज्य के प्रति उन्मुख होती है। सम्पूर्ण इतिहास में मातृभूमि, पैतृक परम्परा तथा स्थिर दीर्घायु सेवा के प्रति प्रवृत्ति, विभिन्न भाषाओं में शक्ति प्रदान करने वाली प्रमुख भाषाओं के रूप में विद्यमान रही है।^१

समान राजनैतिक, सामाजिक, वार्षिक उद्देश्य से प्रेरित आन्तरिक भावना ही राष्ट्रीयता है। वस्तुतः राष्ट्रवाद एक व्यक्तिगत नहीं, समष्टिगत (सामूहिक) चेतना है, जिसकी दृष्टि समूह या वर्ग के अस्तित्व और प्रगति पर है और वह प्रगतिशील तत्त्व भी है।^२

राष्ट्रीयता के अन्तर्गत जाति की स्मृति, संस्कृति की स्मृति, शासन की स्मृति, वार्षिक स्मृति, राजनैतिक लक्ष्यों की स्मृति तथा ऐतिहासिक महान् पुरुषों की जीवन गाथाओं व विजयानों की मान्यता आदि अनेक तत्त्व सम्निहित होते हैं। राष्ट्रीयता किसी एक

- १- ' दि नेशन ह्व दज दि प्राइम फैक्ट वाफ दि प्रेजेंट इपोन एण्ड दि नेशनल सेन्टीमिन्ट, दि डोमिनेन्ट इमोशन वाफ भन । ' सीसल बैंक ग्राउन्ड वाफ इंडियन नेशनलिज्म - ए० वार० पैसाई पृ० ४
- २- ससाधलोपीडिया वाफ ब्रिटनिका - सण्ड १६ पृ० १४६
- ३- डा० सुधीन्द्र- हिन्दी कविता में युगान्तर पृ० २३७

देश से सम्बद्ध समष्टिगत चेतना होती है, जिसमें एक विशेष प्रकार की तीव्रता, अन्तर्गता तथा गौरव की भावना संयोजित रहती है। जाति, भाषा, धर्म, संस्कृति, परम्परा तथा ऐतिहासिकता से सम्पन्न स्फुट की भावना राष्ट्रीयता की जननी है। स्वतन्त्रता की स्फुट की अपेक्षा लक्ष्य की स्फुट का राष्ट्रीयता के वाचिभाव में विशेष योगदान है।

राष्ट्रीय विकास का सामूहिक प्रयास राष्ट्र की समृद्धि में विशेष सहायक होता है, अपने राष्ट्र की सब प्रकार की स्वतन्त्रता एवं उत्कर्ष के लिए प्रयत्न करना, उनकी प्राप्ति करने के बाद बनार रहना और राष्ट्र के समस्त निवासियों में साम्य जीवन की स्थापना करना राष्ट्रवाद किंवा राष्ट्रधर्म कहलाता है।

राष्ट्रीयता के तत्व

राष्ट्र से सम्बन्ध रखनेवाले, उसके निर्माण तथा विकास में सहायक तत्व, राष्ट्रीय तत्व कहलाते हैं। राष्ट्रीयता के विकास शील तत्वों का निर्धारण राष्ट्रीयता की परिभाषाओं की विभिन्नता के कारण दुष्कर प्रतीत होता है। राष्ट्रीयता के विस्तीर्ण क्षेत्र में विभिन्न तत्व समाहित हैं। राष्ट्रीयता के आधारभूत अनिवार्य तत्वों में भौगोलिक स्फुट, सांस्कृतिक स्फुट, ऐतिहासिक परम्परा तथा राजनैतिक वार्थिक स्फुट प्रमुख हैं।

१- सत्यदेव विशालकार- राष्ट्र धर्म पृ० १०८

(१) भौगोलिक स्फुटा

भौगोलिक सीमाओं से सुरक्षित निश्चित भू भाग राष्ट्रीय भावना का उन्मेष करता है। स्वदेश की पृथ्वी-वन-पर्वत-बड़ी वादि प्राकृतिक उपादानों के प्रति तीव्र वफात्व की भावना, नैसर्गिक होती है। यही भावना सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय विचारों की जननी है। स्वदेश से भली भाँति परिचित होने की जिज्ञासा राष्ट्रीय भावना को प्रबल करती है। स्वदेश के प्रति वफात्व की भावना किसी भी जाति के राष्ट्रीय जीवन को सदैव सज्ज रखी जाग्रत बनाए रखती है।

(२) सांस्कृतिक स्फुटा

राष्ट्र की संस्कृति का पतन राष्ट्रीयता के पतन का परिचायक है। सम्यक्ता, इतिहास, धर्म, दर्शन, कला परम्परा के समन्वित योग से संस्कृति का स्वल्प निर्मित होता है। अनेकत्व में स्फुटत्व का भाव निहित रहने पर ही संस्कृतिक राष्ट्रीय स्फुटा में अभिवृद्धि करती है। संस्कृति के विभिन्न अंग साहित्य, कला, संगीत, नृत्य वादि राष्ट्रीय भावना के विकास में सहायक होते हैं। विद्वत् की महान् क्रान्तियों का समारम्भ में साहित्य की विशेष भूमिका रही है। साहित्य राष्ट्रीय स्फुटा के लिए सदैव उपयोगी सिद्ध हुवा है।

वही राष्ट्र सांस्कृतिक दृष्टि से उन्नत और शक्तिशाली होता है जो विश्व की अनेकानेक संस्कृतियों को वात्पसात् कर सके। भारतीय सामासिक संस्कृति इस दृष्टि से अत्यधिक महान्क है।

१६ बरबस, तुर्कस, तातारस, मोगलस, डू हेड सबसेसिवली बीवस ईडिया,
 सुन किंम हिन्दुवाइज्ड । सोशल कैक ग्राउण्ड वाफ ईडिया नेशनेलिज्म,
 २० वार० देसाई पृ० ३०

वीरों ने भारतीय वाधारभूत स्रुता की ध्यान में ररकर भारत की नस्लों, सम्प्रदायों, धर्मों, विश्वासों, भाषाओं तथा रीति रिवाजों का एक संग्रहालय कहा तथा राष्ट्र न कहकर एक उपमहाद्वीप की रीजा दी। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय इतिहास की विकृत रूप में प्रस्तुत करके वाधारभूत सांस्कृतिक स्रुता की सदैव उपेक्षा की। किन्तु वास्तव में भाषा, जाति तथा धर्म की विभिन्नता भारतीय राष्ट्र में बाध्य रूप में दृष्टि गौर होती है, उनके पीछे एक विशेष सांस्कृतिक र्वय तथा हिन्दुत्व की शाश्वत भावना निहित है।

(3) ऐतिहासिक परम्परा

गौरवपूर्ण ऐतिहासिक परम्परार राष्ट्रिय नेता में स्फूर्ति, शक्ति तथा प्रेरणा का समावेश करती है। राष्ट्रियता ऐतिहासिक घटनाओं का प्रतिफल है। प्राचीन ऐतिहासिक गौरव की विस्मृत कर देने वाले राष्ट्र राष्ट्रियता की सुरक्षा में वसपर्य रहते हैं। गौरवपूर्ण वतों वर्तमान में प्रेरणा का सदैव देता है। ऐतिहासिक मान्यताओं द्वारा राष्ट्रिय भावना को पुष्टि होती है, क्योंकि ये किसी राष्ट्र की सांस्कृतिक गौरव की पृष्ठभूमि का कार्य करती हैं।

(4) राजनैतिक स्रुता

राष्ट्रियता की परिपक्व भावना राजनैतिक स्रुता में निहित है। राज्यों द्वारा ही राष्ट्रियता का स्वरूप मूर्तिमान

होता है। प्रत्येक राष्ट्रवासी एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्र की वाक्यदाता करता है। विदेशी सत्ता को देश से निर्वासित करने की भारतीयों की सामूहिक इच्छा सतत राजनैतिक संघर्षों के उपरान्त फलीभूत हुई है।

(५) वार्षिक स्मृति

एक ही प्रकार की वार्षिक कठिनाइयाँ तथा उसकी पूर्ति के लिए प्रयत्नशील व्यक्तियों में स्फूर्ति की भावना का प्रवेश होता है। वीरों द्वारा शोणित भारतवर्ष अत्यन्त सरलता से एक होकर वीरों के विरोध में संजत हो गया। समान वार्षिक उद्देश्य जीवन में राष्ट्रीय चेतनाको उत्तेजित करता है।

उपरोक्त वनिवार्य तत्वों के अतिरिक्त राष्ट्रियता के कुछ आवश्यक (किन्तु वनिवार्य नहीं) तत्व होते हैं जिनमें भाषा, जाति, तथा धर्म प्रमुख हैं :

(१) भाषात्मक स्मृति

एक राष्ट्र में अवस्थित विभिन्न जातियों में पारस्परिक विचार विनिमय का सुचारु साधन भाषा है। भाषा राष्ट्रीय वात्सा की वाणी है जो स्फूर्ति को जाग्रत करती है। राष्ट्र के विभिन्न भागों को एकजुट में पिरोने के लिए राष्ट्र भाषा की आवश्यकता होती है। भारत जैसी विशाल तथा बहुभाषी राष्ट्र के लिए तो यह और भी आवश्यक है। गांधी जी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा

के रूप में प्रवर्तित करके उसे अपने स्वाधीनता आन्दोलन का एक ढंग बना लिया था। भाषा राष्ट्रीय विचारों की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम है। भारत सश्रु बहुभाषी राष्ट्र में भाषागत एकता निरपेक्ष रूप से अनिवार्य नहीं है। भाषा की एकता कभी कभी राष्ट्र को दुर्बल कर देती है तथा साम्प्रदायिक दंगों को उभारती है। यह एक कटु सत्य है कि ब्रिटिश सत्ता के दासत्व काल में अंग्रेजी साहित्य के अनुशोतक परिणामस्वरूप शिक्षित भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना का प्रासुभावि हुआ। “अंग्रेजी हिन्दू सुधारवाद की भाषा बनी। उसके बिना हिन्दू धर्म का सुधार और हिन्दू समाज का पुनर्गठन अवश्य हुआ होता, पर वह आन्दोलन प्रादेशिक होता तथा भारत की एकता और भी क्षिन्न हो जाती।” यह द्रष्टव्य है कि स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द, महात्मा गांधी तथा डा० राधाकृष्णन् जैसे हिन्दू सुधार आन्दोलन के महान् कर्णधारों ने अधिकृतः अंग्रेजी में (कभी कभी तो अंग्रेजी में ही) अपने विचार व्यक्त किए।

(२) जातीय एकता

जातीयता की दृष्टि से सभी राष्ट्रों का पारस्परिक सम्बन्ध अधिक सुदृढ़ हो गया है। किसी भी देश में एक एकल जाति का निवास नहीं होता, अपितु अनेक जातियाँ विद्यमान हैं। विभिन्न जातियों के पारस्परिक वादान प्रदान के कारण अब जातिगत शुद्धता भी शेष नहीं रह गई है। साम्प्रदायिक दंगे होते हुए भी विदेशी आक्रमण की

१- कै० एम० पणिकर- कामनसेंस रबाउट इंडिया पृ० २४

२- डा० कर्ण सिंह- भारतीय राष्ट्रियता का अग्रदूत पृ० १४

संकटातीन स्थिति में ये विभिन्न जातियाँ परस्पर संगठित होकर सामूहिक रूप से बाह्य संकट का सामना करती हैं। पाकिस्तान के वाक्यमण के समय भारत में उत्पन्न अभूतपूर्व स्तब्धता का उदाहरण है। आज विश्व के सभी बड़े राष्ट्र कई जातियों के संगम स्थल बने हुए हैं जिनमें भारत प्राचीन काल से ही अग्रणीय है।

(३) धार्मिक स्तब्धता

प्राचीनकाल से धर्म भारतीय वैयक्तिक तथा सांस्कृतिक जीवन की समस्त धाराओं का प्रेरणा स्रोत रहा है। श्री नरसिंह ने लिखा है, " भारतीय जीवन के सभी महान् आन्दोलनों का उदय नई आध्यात्मिक विचार धारा और प्रायः नए धार्मिक कर्मकाण्ड से हुआ है।" १६ वीं शती में हुए भारतीय नव जागरण के बारे में यह निःसंदेह सत्य है। वास्तव में हिन्दू धर्म के सुधार आन्दोलनों के साथ ही नवजागरण का शुभारम्भ हुआ जो बाद में राजनीतिक मुक्ति की दृष्टि में दुर्लभ वेग से अग्रसर हुआ।

आधुनिक युग में धार्मिक स्वातंत्र्य के कारण धर्म राष्ट्रीयता का पोषक अतिवायं तत्व शेष नहीं रह गया है। प्राचीन इतिहास में ऐसी कतिपय उदाहरण मिलते हैं जब धार्मिक वैराग्य के कारण राष्ट्रीय स्तब्धता स्रष्टित होगई। भारत विभाजन का एक मात्र कारण धार्मिक मतभेद था। मध्य युग में धार्मिकता ही राष्ट्रीयता का पर्याय थी। लोक युद्ध राष्ट्रीय सीमाओं के लिए न लड़े जाकर धर्म के लिए लड़े गए। और धर्मान्धता मानवता के लिए मोक्षणा दण्ड का सूत्रपात करती है। इस्लामी धर्म प्रचारकों ने धर्म के लिए रक्तपात किए, मूर्तियाँ स्रष्टित

की। बौद्धों तथा ब्राह्मणों के धार्मिक विवादों ने राष्ट्रीयता को घोर
घाति पहुँचाई।

बाज धर्म व्यक्तिगत वास्था विश्वासों के रूप में
व्यवस्थित है। विभिन्न धार्मिक विश्वासों के रहते हुए भी राष्ट्र के प्रति
पूर्ण वास्थाभाव व्यक्त किया जा सकता है। आधुनिक प्रगतिशील युग में
धर्म-निरपेक्षाता पर अधिक बल दिया गया है।

राष्ट्रीयता और देश-प्रेम

देश प्रेम का सम्बन्ध हृदय से है तथा राष्ट्रीयता
का मस्तिष्क से। देश प्रेम देश के प्रति निसर्गतः अनुराग की भावना है
तथा राष्ट्रीयता मस्तिष्क के तर्क से उद्भूत वैचारिक प्रक्रिया। देश प्रेम
राष्ट्रवाद का शाश्वत रूप है तथा राष्ट्रीयता उसका उन्नत स्वरूप।
राष्ट्रीयता एक समष्टिगत वैचारिक चेतना है जिसका लक्ष्य समष्टि का
अभ्युदय और प्रगति है। देश प्रेम राष्ट्रीयता के मूल में केंद्र रूप में विद्यमान
रहता है। वस्तुतः दोनों ज्ञान और भावित की तरह अन्योन्याश्रित हैं।
देशभक्ति में रागात्मकता है, राष्ट्रीयता वैचारिक चेतना से पूर्ण होती
है। रागात्मक वंश से युक्त राष्ट्रीयता देश भक्ति की भावना से अनुप्राणित
होती है। राष्ट्रीयता जाति, वर्ण, रक्त के भेद को विस्मृत कर राष्ट्रवैय
उत्थान तथा सामूहिक कल्याण भावना से अनुप्रेरित होती है, तथा मानव
की विकासोन्मुख प्रवृत्ति की पीतक है। देश प्रेम प्राकृतिक सौंदर्याकर्षण
का उत्साह है, राष्ट्रप्रेम उच्च विचार और सहानुभूति का फल है। राष्ट्र
प्रेम ही वस्तुतः प्रेम है, देश प्रेम तो एक भाव मात्र है।

बाधुनिक भारतीय राष्ट्रियता का प्रादुर्भाव

भारत में राष्ट्रियता की उत्पत्ति से सम्बन्धित दो मत प्रचलित हैं। एक मत के अनुसार भारतीय राष्ट्रिय भावना प्राचीन काल से ही पूर्ण विकसित रूप में विकसित थी तथा बाधुनिक राष्ट्रियता उसी परम्परा के सतत विकास का प्रतिफल है। "हमारी राष्ट्रियता केवल अंग्रेजों का विरोध करने के लिए नकारात्मक रूप से किन्हीं विशेष परिस्थितियों में उत्पन्न नहीं होगई। उसकी जड़ें हमारी ऐतिहासिक और वार्षिक परम्पराओं में बहुत गहरी पैठी हुई हैं।"

दूसरा वर्ग बाधुनिक भारतीय राष्ट्रियता को पाश्चात्य प्रभाव से उद्भूत मानता है। "वाज के प्रचलित अर्थ में राष्ट्र और राष्ट्रियता ये दोनों शब्द भारत के लिए नए हैं।" इनका प्रचलन भारत में अंग्रेजी साम्राज्यवाद के वार्षिक शोचण की प्रतिक्रिया स्वरूप आरंभ हुआ। योरोप के राजनीतिक तथा सांस्कृतिक प्रभाव से भारतीयता की रक्षा के क्रम में सर्वप्रथम सांस्कृतिक राष्ट्रियता जाग्रत हुई, तदुपरान्त वही राष्ट्रियता राजनीतिक राष्ट्रियता में परिणित होगई। बाधुनिक राष्ट्रियता का प्रथम उत्थान सन् १८५७ के विद्रोह में परिलक्षित होता है, जब प्रथम बार राष्ट्रियता धर्म सम्प्रदाय तथा प्रदेश के संकुचित घेरे से निकल कर चतुर्दिक् व्याप्त हुई। वस्तुतः राजभक्ति से अंतर्तोष होने

१- डा० रामविलास शर्मा- राष्ट्रभाषा की समस्या पृ० १८०

२- श्री रामधारी सिंह दिक्कर- राष्ट्रभाषा और राष्ट्रियस्कता पृ० ११३

३- "इंडियन नेशनलिज्म इज ए माडर्न फिनीमना ।। इट इज अ वण्डर द

कन्डीशन्स वाफ पोलिटिकल सव्वेजेशन वाफ द इंडियन पीपुल बाइ

द ब्रिटिश । द सब्वाइस्ट ब्रिटिश नेशन, फार इट्स वीन परफ,

रेडिकली चेंज द स्ट्रक्चर वाफ द इंडियन सोसायटी एस्टेब्लिश्ड ए

सेन्ट्रलाइज्ड स्टेट, एण्ड इन्ट्राड्युस्ड माडर्न एक्लेशन। माडर्न मीन्स वाफ कम्प्लेनिकेशन्स एण्ड अदर इन्स्टीट्यूशन्स ।

पर भी शुद्ध राष्ट्र भक्ति का प्रादुर्भाव हुआ और इसी से राष्ट्रवाद का विकास ।

निकर्ष

प्राचीन काल में भारतीय राष्ट्रियता का स्वरूप उत्कर्ष मूलक था । बादिकाल तथा मध्यकाल में राष्ट्रियता की भावना संकुचित होकर दरबारों तक सीमित रह गई । तथा दीर्घकालीन दासता के कारण राष्ट्रिय चेतना का पूर्वातया लोप सा होगया । वाधुनिक युग में ब्रिटिश शासन के अमानुषिक , बर्बर दमन, अत्याचार तथा वार्षिक शोषण के परिणामस्वरूप वाधुनिक भारतीय राष्ट्रियता के उपयुक्त वातावरण का सर्जन हुआ ।

१- डा० सुधीन्द्र - हिन्दी कविता में गुणान्तर पृ० २१

वर्ध्याय २

प्रसाद युगीन परिस्थितियाँ

- १- राजनीतिक
- २- वार्त्तिक
- ३- शिदा
- ४- सामाजिक- धार्मिक
- ५- सांस्कृतिक

बोझाय - २

प्रसाद - युगोनि परिस्थितियां

(१) राजनैतिक

बोसबीं शताब्दी के प्रथम पांच वर्षों के अन्तर्गत भारतीय जनता में अंग्रेजों के प्रति प्रबल विरोध की भावना बलवती हो गई थी। जनता का विश्वास राजनैतिक भिन्नावृत्ति से हट गया था तथा अकाल, प्लेग, पदापातपूर्ण शासन, दूषित अर्थ नीति के कारण देश में घोर अस्तौष व्याप्त था। लार्ड कर्जन की दमनकारी नीतियाँ इंडियन यूनिवर्सिटी स्बट, तिब्बत पर आक्रमण तथा सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना सन् १९०५ में हिन्दू मुस्लिम मेद नीति के आधार पर बंग प्रान्त के विभाजन से हिन्दू जनता अधिक द्रुबध थी। " सन् १९०५ का वर्ष हमारे स्वातन्त्र्य आन्दोलन के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस वर्ष जनता में नवजीवन का संचार हुआ और वह अपनी लोई हुई स्वाधीनता पुनः प्राप्त करने के लिर कृत-संकल्प से प्रतीत हुई।

बंग-भंग विरोधी आन्दोलन के फलस्वरूप राष्ट्रीयता तथा नवचैतना की बलमिला तथा राष्ट्रीय शिक्षा का प्रादुर्भाव हुआ। इंग्लैंड के तैयार माल का बहिष्कार तथा स्वदेशी आन्दोलन, देशी उद्योग धन्धे सक्रिय हो उठे। कलकत्ता काग्रेस अधिवेशन (१९०६) में

१- वाचार्य नरेन्द्र देव- राष्ट्रीयता और समाजवाद पृ० ६४

वादा माहं नौरौजी द्वारा प्रयुक्त 'स्वराज' शब्द के प्रयोग तथा फैजाब में प्रवास सम्बन्धी बिल (१९०७), सभा बन्दी कानून (१९०८) तथा प्रेस एक्ट (१९०८) एवं अन्य कारणों से जन-विद्रोह तीव्रतर होता गया। सन् १९०६ में मिन्टो मॉर्ले योजना के रूप में कुछ शासन सम्बन्धी सुधार हुए किन्तु जमींदारों के प्रति पदापात तथा निर्वाचन पद्धति साम्प्रदायिकता के आधार पर होने के कारण यह योजना असफल रही। कांग्रेस ने (१९०६) धर्म के आधार पर स्थापित पुराने निर्वाचन पद्धति से असहमति प्रकट की।

प्रत्यक्ष वैधानिक वान्दीलनों को कुचले जाने की स्थिति में वार्त्तकवादो गुप्त, कार्यवाहियाँ प्रारंभ हुईं। 'युगान्तर', 'सन्ध्या', वन्दे मातरम् 'आदि फल नवीन जाग्रति के प्रचारक बने। मिन्टो मॉर्ले सुधार योजना से असंतोष के कारण हिंसा, सैनिक विद्रोह, राजनीतिक हत्याओं, बमबाजी तथा राजद्रोह का श्रृंखलित प्रचार हुआ तथा भारतीय नव शिक्षित युवा वर्ग कांग्रेस के वैधानिक राष्ट्रीय वान्दीलन को अविश्वास की दृष्टि से देखने लगा। परिणामस्वरूप राष्ट्रीय वान्दीलन रचनात्मक वार्त्तकवादो तथा राजद्रोही स्वरूप में पर्यवसित होगया था। ब्रिटीश वेद नीति के कारण सन् १९०७ में मुस्लिम लीग का आविर्भाव हुआ जो देश भक्त संस्था न होकर राजभक्त संस्था थी तथा जिसमें राष्ट्रीय वादशर्तों का पूर्ण अभाव था। बाद में तुर्कों के विरुद्ध ब्रिटीश युद्ध के कारण हिन्दू मुस्लिम स्वयं का प्रतिपादन किया गया।

सन् १९१६ में तिलक^१ तथा स्वीसेन्ट ने होम रूल लीग की स्थापना की जिसका ध्येय ब्रिटीश साम्राज्य के अन्तर्गत भारतीय स्वशासित भू भाग की प्राप्ति था। कंग्रेस ने अनुरदायित्व पूर्ण स्वशासन का प्रस्ताव रखा। मॉन्टेग्यू ने भारत में अनुरदायित्व पूर्ण शासन स्थापित करने का उद्देश्य प्रकट किया, किन्तु तत्सम्बन्धी रिपोर्ट में स्वशासन नाम मात्र के लिए था। इस 'रिपोर्ट' के अनुसार प्रमुख अधिकार- विधायक, पुलिस, लगान, कर, पुलिस, वादि ब्रिटीश पदाधिकारियों को प्राप्त थे तथा अन्य साधारण अधिकार जन स्वास्थ्य, शिक्षा वादि भारतीयों को दिए गए थे। वास्तविक राजनीतिक तथा वार्षिक शासन सूत्र ब्रिटीशों द्वारा संभालित थे^२।

सन् १९१४ में प्रथम विश्वव्यापी युद्ध प्रारंभ हुआ जिसमें भारत ने 'राजमन्त्रि' का अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया। किन्तु उपहार स्वरूप 'डिफेन्स वाफ इंडिया' तथा 'रोलट बिल' सदृश नागरिक स्वतन्त्रता के प्रतिघातक प्रशासनिक व्यत्याचारों का सम्मना करना पड़ा। सन् १९१६ में 'रोलट बिल' के स्वीकृत होने के समय से

१- वेलेन्टाइन शिरोल की पुस्तक- इंडियन जनरेस्ट के अनुसार

“ ४००,००,००० तिलक भारतीय चेतना के जनक होने का दावा कर सकते हैं।

२- २० वारं देसाई- सोशल कैब ग्राउण्ड वाफ इंडियन नेशनलिज्म वाफ दि रिफार्म्स वाज दि सव्जैक्ट वाफ मोस्ट विटाल इम्पोर्ट वियर कैस्ट इन रिजर्व एण्ड इन रिगार्डिंग ट्रांसफर्ड सव्जैक्ट्स रिजल एडवान्स इन दि स्फेयर नीड्ड फाइनल्स विच वाज वाउट साइड दि कन्ट्रोल वाफ मिनिस्टर्स।

भारतीय राष्ट्रीय इतिहास में 'गंधी युग' का सूत्रपात होता है। सन् १९१६ का वर्ष भारतीय ब्रिटिश इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ता है। यह वर्ष भारत तथा ब्रिटेन के भावी राजनैतिक सम्बन्धों पर पर्याप्त प्रभाव डालने वाली चार वाश्चर्यजनक घटनाओं के कारण स्मरणीय है :

(१) रौल्ट बिल तथा पंजाब में अमानुषिक व्यवहार, माशेल ला ।

(२) भारतीय राष्ट्रीय रंगमंच पर गांधी जी का
वाकिर्भाष ।

(३) सिलापास का प्रश्न

(४) मान्टेग्यू बेम्सफोर्ड रिपोर्ट की अनुपस्थिति^२

गंधी जी ने "रौलट एक्ट" के विरोध में सत्याग्रह सभा के संकलन का निश्चय किया।

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् शासन की ओर से
 'रोलट एक्ट' तथा गवर्नमेन्ट आफ इंडिया एक्ट 'सदृश स्वाधीनता

१- आर० सी० मजूमदार - स्तुगल फार प्रीठिम पृ० २६४

२- .. प्र० २६२

३- अथ .. प्र० ३०१

के घातक दूर तथा अमानुषिक उपहार प्रेषित किए जाने पर गांधी जी के नेतृत्व में सम्पूर्ण देश में विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी। भारतीयों ने ब्रिटिश सत्ता की पुनः राष्ट्रीय परिमाण पर चुनौती दी। सत्याग्रह के अहिंसात्मक नियमों का आवेग के अतिरिक्त में उल्लंघन करके जनता ने हिंसक कार्यों की प्रोत्साहन दिया जिसे गांधी जी ने सत्याग्रह वात्सल्यन स्थगित कर दिया^२। उसी समय जनरल डायर ने जलियावाला बाग में निर्दोश जनता पर गोली चलवा कर नृसंहार, बर्बरता तथा पाशविकता की बेजोड़ मिसाल प्रस्तुत की। अब वार्त्कवादी देश भक्तों पर अमानुषिक अत्याचार हो रहे थे। पंजाब के प्रति ब्रिटिश शासन का दृष्टिकोण घोर शत्रुता पूर्ण था। जलियावाला बाग की रौमाक्ष घटना ने समस्त भारत में वार्त्कपूर्ण वातावरणकी सृष्टि की^३। अमृतसर तथा पंजाब के ५ जिलों में १५ अप्रैल से २४ अप्रैल तक 'मार्शल ला' जारी कर दिया गया। पंजाब में कानून तथा वादेश की बाढ़ में पंजाब की जनता की घोर दुर्दशा की गयी।

१- गुरुमुखि निहाल सिंह- भारत का संवैधानिक एवं राष्ट्रीय विकास पृ० ३८६

२- वार० सी० मजूमदार- स्ट्रगल फार फ्रीडम पृ० ३८६

“ वीन एप्रिल १४, ए बिग ड्राउड सराउन्डेड ए ट्रेन, स्टोन्ड इट एण्ड बन्ट टू रेलवे ब्रिज, इन्क्लुडिंग दि वन मेन्सन्ड एबव । दि ड्राउड वैन सेट फायर टू दि टेलीग्राफ वाफिस, पोस्ट वाफिस, रेलवे स्टेशन, डाक बंगला, दि वाफिस वाफ दि कलेक्टर, ए रेलवे शिड, ए चर्च एण्ड ए स्कूल । ”

३- वार० सी० मजूमदार- स्ट्रगल फार फ्रीडम पृ० ३०६

“ डायर--- वीर्ड्स दी ट्रम्स वाफ फायर, स्ट एबाउट हंड्रेड यार्ड्स रैनज वपीन ए डेन्स ड्राउड, एस्टीमेटेड बाइ किम स्ट ६,०० एण्ड बाई अक्स स्ट १०,००० एण्ड मोर , अट प्रेवेंटिवल कनवार्ड, एण्ड वाल क्वाइट डिफेन्सलेस ।

४- अरि० सी० मजूमदार- स्ट्रगल फार फ्रीडम पृ० ३०७

सम्पूर्ण हिन्दू मुस्लिम जन समुदाय ' पंजाब
ट्रेडिङ' तथा ' सिलाफत के प्रश्न ' (अंग्रेजों द्वारा मुसलमानों के
धार्मिक केन्द्र तुर्की का वंग भंग) पर बाग बहला हो उठी थी । जनता
की तोड़ मार पर पंजाब के व्यापारियों की जाँच के लिए वायसराय ने
' हण्टर कमेटी ' नियुक्त की , जिसमें पदापातपूर्ण निर्णय प्रकाशित
होने पर गांधी जी के नेतृत्व में सर्वत्र सार्वजनिक असहयोग आन्दोलन
(२ जून सन् १९२०) के उपयुक्त वातावरण निर्मित हुआ ।^२

महात्मा गांधी वाध्यात्मिक दृष्टिकोण समन्वित
होने के कारण भारतीय मुस्लिमों की, अंग्रेजों द्वारा टर्की के वंग भंग
करके धार्मिक भावनाओं के कुचल जाने के कारण अधिक प्रभावित थे ।^३

१- वारं सी० मजूमदार- स्ट्रगल फार फ्रीडम पृ० ३०७

" अर्भग डायर्स ईम्प्रेसन्स--- वाज दि कर्टिंग वाफ वाटर सप्लाइ
एण्ड दि इलेक्ट्रिक सप्लाइ वाफ दि सिटी-- वाइ हिज वार्डंस--
स्वरी वन -- वाज वार्डंस टू ड्राउल विय मैली टू दि ग्राउण्ड ।
फुलॉर्गिंग्स वेयर ए कामन फीचर वाफ दि मार्शल ला स्ट्रमिनि-
स्ट्रेशन । "

२- ए० वारं देसाई- सीशल कै ग्राउण्ड वाफ इंडियन नेशनलिज्म - "

गांधी वाज एन्ट्रस्टेड विय दि लीडरशिप वाफ दि कम्पन विकास वाफ
हिज पास्ट स्वसपीरिएन्सीज वाफ सब स्ट्रगल्स । दि कम्पन वाज मेन्टेड
टिल दि पंजाब एण्ड सिलाफत रीग्स वेयर रिहस्ट एण्ड स्वराज
इस्टेब्लिश्ड ॥ पृ० ३२२

३- वारं सी० मजूमदार स्ट्रगल फार फ्रीडम- सिलाफत रीग्स वेयर दि
सिंगिल इशू विच डिटरमिन्ड हिज स्वशन, की पंजाब स्ट्रीसिटोज एण्ड
विनिंग वाफ स्वराज वेयर सबोडिनेट इशूज ॥ पृ० ३३२

- पी० सीतारामैया- हिस्ट्री वाफ कणिस- दि जिवनी वाफ दि सिलाफत
एण्ड पंजाब रीग्स, एण्ड दि इनविजीबल फलो वाफ इनरहिबिटेड रिफार्म्स
एनरिज्ड बोथ इन वोल्यूम एण्ड कन्टेन्ट दि स्ट्रीम वाफ नेशनल हिस्कोन्

उन्होंने सहयोग से असहयोग की ओर उन्मुख होकर हिन्दू मुस्लिम प्रातु भाव समन्वित बहुतत्त्व स्तुत का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत किया । विदेशी वस्तुओं के सार्वजनिक बहिष्कार के कार्यक्रम के अन्तर्गत सरकारी स्कूलों, अदालतों, कौंसिलों, नौकरियों, उपाधियों, सरकारी उत्सवों तथा विदेशी माल के परित्याग का निश्चय किया गया । सन् १९२१ में असहयोग कार्यक्रम के लिए तिलक स्वराज फण्ड की अपील की गई । नई कौंसिलों के चुनाव के प्रश्न को लेकर कांग्रेस में दो मत हो गए । गांधी जी कौंसिलों के बहिष्कार के पक्ष में थे तथा सी० बाल० दास , पटेल तथा श्री मोतीलाल नेहरू आदि विपक्ष में थे । २२ फरवरी को चौरा चौरा में भीषण हत्या काण्ड हो जाने पर गांधी जी ने ' बारदोली निर्णय ' के अन्तर्गत असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया । तत्पश्चात् खनात्मक कार्यों चला प्रचार, विद्यालयों का खोलना, मादक द्रव्य निषेध, अस्पृश्यता निवारण, स्त्री स्वातन्त्र्य, हिन्दू मुस्लिम एकता आदि राष्ट्र निर्माणक तत्त्वों की ओर ध्यान केन्द्रित किया । उन्होंने सामूहिक सत्याग्रह के स्थान पर व्यक्तिगत सत्याग्रह की अनुमति दी क्योंकि आत्म संस्कार द्वारा ही राष्ट्र संस्कार का कार्य पूर्ण होना संभव है।

सन् १९२२ से १९२७ तक राष्ट्र में स्वराज पार्टी का कार्यक्रम जारी रहा । इस बीच हिन्दू मुस्लिम साम्प्रदायिक द्वेष

१- २० बार० देसाई- सोशल बैंक ग्राउण्ड आफ इंडियन नेशनलिज्म -

“ दि इयर्स आफ दि मूवमेन्ट केयर दि इयर्स आफ दि फोर्गिंग आफ दि यूनिटी एण्ड खन लार्ज स्केल यूनाइटेड स्वशन आफ दि हिन्दू एण्ड मुस्लिम कम्युनिटीज़ ।। पृ० ३२८

२- बार० सी० मजूमदार- स्टूडेंट फार प्रोग्रेस पृ० ३३४

प्रबल होउठा^१ । ३ फरवरी सन् १९२८ को साइमन कमिशन के आगमन पर दिल्ली में मोर्चाबंदी का प्रदर्शन किया गया । सन् १९२९ लाहौर कांग्रेस में पूर्ण स्वराज्य का ध्येय घोषित किया गया ।

सन् १९२४ में देहली, गुलबर्ग, नागपुर, लखनऊ, शाहजहाँपुर, बलाहाबाद, जबलपुर तथा कोहल में हिन्दू मुस्लिम साम्प्रदायिक द्वेष का हिंसक प्रदर्शन हुआ ।

२६ जनवरी सन् १९३० को संपूर्ण देश में स्वाधीनता दिवस मनाया गया । सविनय अवज्ञा आन्दोलन के लिए गांधी जी ने कार्यक्रम निश्चित किए जिनमें नमक कानून भंग, सादी प्रचार, अस्पृश्यता निवारण प्रमुख थे । १२ मार्च सन् १९३० को गांधी जी ने ७६ साथियों के साथ

१- २० वारं देसाई- सोशल बैक--- । पृ० ३२६

‘ पैडित नेहरू रिमाइन्ड- हिन्दू एण्ड मुस्लिम कम्युनलिज्म एवं इन नीदर कैस, एवं बोनाफाईड कम्युनलिज्म, बट पोलिटिकल एण्ड सोशल रिस्वशन हिडिंग बिहाइन्ड दि कम्युनल मास्क ।

२- वही - ‘ दि लाहौर कांग्रेस डिफाईड स्वराज वस मीन्स कम्युनिटी फ्रीडम फ्राम ---- ब्रिटिश इम्पीरियलिज्म ।। पृ० ३३४

३- वारं पी० एन- इंडिया टु डे - ‘‘ लैट एवरी विलेज फैम वार मेनुफैक्चर कन्ट्रिब्यूट साउथ, सिस्टर्स शुड फिफ्ट लिक्वर शास, वापियस डेन्स एण्ड फौरेन बलाय डोल्स शास । येन एण्ड बील्ड शुड स्विफ फौरेन बलाय शुड बी बन्ट । हिन्दूय शुड इस्चूय वनटबिलिटी लैट स्टुडेंट्स लीव गवर्नमेंट स्कूल्स एण्ड कोलेज एण्ड गवर्नमेंट सर्विन्ट्स रिजायन देयर सर्विस ।। पृ० ३३९

समुद्र तट स्थित डाण्डी ग्राम की वीर पैदल प्रस्थान किया तथा विभिन्न नमक कानून भंग किया ।

५ मई सन् १९३० को गांधी जी के गिरफ्तार हो जाने पर देश व्यापी हड़ताल हुई तथा बम्बई में विराट् जुलूस निकाला गया । फ़ावर, बम्बई तथा अन्य स्थानों पर कई व्यक्ति कैद किये गए वसंत्य भारतीयों पर लाठियाँ बरसाई गई । सरकार का दमन का पूर्ण तीव्रता पर था ।

सन् १९३१ में गांधी जी बिना किसी शर्त पर रिहा कर दिए गए तथा गांधी हरविन सप्ताह (५ मार्च १९३१) के अनुसार अहिंसावादी कैदियों की सुक्ति की घोषणा की गई । सन् १९३१ में संयुक्त प्रान्त के कुछ भागों तथा गुजरात और बर्मा में कृषक वर्ग ने लगान तथा कर देने से इन्कार कर दिया । शासन ने कांग्रेस को इसका जिम्मेदार ठहराते हुए गांधी हरविन शर्तों की अवहेलना की तथा गांधी जी पुनः कैद कर लिए गए । जेल में गांधी जी ने दलित जातियों के लिए पुष्कः निर्वाचन के विरोध में वामरूप अनशन प्रारंभ किया । २० मई सन् १९३४ को सत्याग्रह बान्दीलन स्थगित कर दिया गया ।

१- २० वार० देसाई - सोशल कैब ग्राउण्ड वाफ इंडियन नेशनलिज्म

“ इट इज्जट स नम्बर वाफ वोहिनेस “ इट प्रोस्टाइज्ज दि कांग्रेस एण्ड वाल इट्स ब्रान्च । अण्डर दि प्रेस वोहिनेस ६७ न्यूज पेपर्स एण्ड ५५ प्रिंटिंग प्रेस ऐड बीन क्लोज्ड । दि नम्बर वाफ पोलिटिकल प्रिजिस स्वेल्ड टू १०,००० इयूरिंग दिस पीरियड ।।

वास्तव में जिस सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना का जन्म भारतेन्दु युग में हुआ , उसने प्रसाद युग में व्यापक राष्ट्रीयता का स्वरूप धारण कर लिया ।

प्रसाद युगीन राष्ट्रीयता का स्वरूप त्रिकोणात्मक दृष्टिकोणों से युक्त था-

- १- सांस्कृतिक - राजनैतिक, राष्ट्रीयता के उभय पक्षों की तीव्र अभिव्यक्ति
- २- स्वराज्य की माँग
- ३- वार्त्तिकवादी वान्दोलन का व्यापक प्रभाव

प्रसाद युग में राष्ट्रीय सांस्कृतिक राजनैतिक जागरण के साथ साथ, विदेशी शासन की प्रतिरोधात्मक निरंकुश दमन नीति के पोषण से राष्ट्रीय व्युत्थान में तीव्रता का समावेश हुआ तथा उसे जन-वान्दोलन का स्वरूप प्राप्त हुआ ।

(२) वार्षिक

भारतीय राष्ट्रीय चेतना के विकास का तत्कालीन वार्षिक व्यवस्था के साथ गहन सम्बन्ध रहा है^१। ब्रिटिश शासन की स्थापना के परिणामस्वरूप नवोदित भारतीय पूँजीपति वर्ग भारतीय हस्त उद्योग धन्धों के पतन में विशेष सहायक सिद्ध हुआ तथा भारत ब्रिटिश शासनकालीन वार्षिक व्यवस्था में एक उपनिवेशक मात्र तथा कच्चे माल वाले एक सेतिहर देश के रूप में रह गया^२। १९ वीं शती के प्रारंभ में ही भारतीय सुसंगठित हस्त उद्योग धन्धों पर बाधार्थित ग्रामीण वर्ग व्यवस्था अस्त व्यस्त हो गई तथा शासन व्यय सीमा सुरक्षा व्यय भूमि, दुर्भिक्षों के परिणामस्वरूप निर्धनता उत्पन्न वृद्धि होती गई। तत्कालीन भारत ब्रिटिश साम्राज्यवादी, पूँजीवादी तथा औपनिवेशिक शोषण नीति का केन्द्र था। वीजों द्वारा संरक्षित देशी रियासतों, राजाओं, नवाबों तथा जमींदारों के दबाव के कारण कृषक की वार्षिक स्थिति अधिक दयनीय होगई थी। प्राचीन भारतीय शासन प्रणाली में इस प्रकार का वार्षिक साम्राज्यवाद कभी प्रचलित नहीं था।

वीज साम्राज्यवादी वार्षिक शोषण के परिणामस्वरूप कृषि अवलम्बित जनता, जमींदारों के अत्याचारों से तथा प्राकृतिक प्रकोपों से अस्त होने के कारण, नवीन कृषि सम्बन्धी वैज्ञानिक उद्धारणों से भी सर्वथा उदासीन थी। अतः औद्योगिक विकास के बावजूद भी वर्ग-व्यवस्था पूर्ववत् थी। कृषक तथा श्रमिक वर्ग की अज्ञानता के फलस्वरूप

१- २० वार० देसाई- सोशल कैंग्राउण्ड आफ इंडियन नेशनलिज्म पृ० ६

२- श्री लक्ष्मीसागर वाष्णीय- २० वीं शताब्दी हिन्दी साहित्य : नए

संदर्भ पृ० ६६

३- २० वार० देसाई- सोशल कैंग्राउण्ड पृ० २८३

“ दि पीपुल्स फाउण्ड इन दि न्यू लैण्ड एण्ड रेन्यू सिस्टम्स
इन्डोइयन्स बाइ ब्रिटन, दि बैसिक काज आफ डेयर प्रोग्रेसिव इम्प्रा-
इजमेन्ट ।।

बम्पारन में विद्रोह हुआ। वहाँ के किसान नील की खेती तथा विदेशी मालिकों के अत्याचारों से दुःखी थे। उन्होंने गांधी जी के नेतृत्व में मालगुजारी देने में असमर्थता प्रकट करके सरकारी दमन का दृढ़तापूर्वक सामना किया।

ब्रिजजी शिदा के परिणामस्वरूप वर्ध शिदित मध्य वर्ग का उदय भारतीय आर्थिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है। इस वर्ग की वाजीविका का एक मात्र साधन शासन सेवा बृत्ति थी। शासकीय सेवावृत्ति के अभाव के कारण मध्य वर्ग में बेरोजगारी का व्यापक प्रसार था। नवीन शिदा से उद्योग धन्यो तथा व्यवसायों को कोई प्रोत्साहन नहीं मिल रहा था। अतः इस 'टुटपुबिया मध्यवर्ग' ने राजकीय सेवा, स्वार्थमूलक स्वीकार्य करके ब्रिटिश शासन व्यवस्था को सुदृढ़ करने में मदद दी तथा नैतिक पतन के उदाहरण प्रस्तुत किए।

किन्तु इस तथ्य से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि शास्त्रात्मक शिदा के बौद्धिक कालीन में विकसित नवीन मध्यम वर्ग भारतीय राष्ट्रीय संघर्ष में विशिष्ट सहयोगी सिद्ध हुआ। शास्त्रात्मक विचारकों के स्वातंत्र्य सम्बन्धी क्रान्तिकारी विचारों के अनुशीलन से भारतीय शिदित मध्य वर्ग ने अभूतपूर्व राजनैतिक चेतना से सम्पृक्त

१- ए० आर० देसाई- सोशल कैंग्रस आफ इंडियन नेशनलिज्म-

“ दैट मावर्स दि बिगनिंग आफ दि पीजिन्ट्स एण्ड आफ दैट इन्टीमिट कान्टेबल बिटवीन दि एजुकैटेड पब्लिक वर्क्स एण्ड दि मासेज, विच वेयर बिग इन फ्यूचर कौन्सिलरस ।। पृ० ३०९

२- लक्ष्मीसागर वाष्णीय - बीसवीं शताब्दी हिन्दी साहित्य - नर
संदर्भ पृ० ६७

होकर राष्ट्रीय बान्दीलन के कार्यक्रम में सक्रिय भाग लिया ।

साम्राज्यवादी वार्षिक शोषण नीति के होते हुए भी पश्चात्य ज्ञान विज्ञान के सम्पर्क के फलस्वरूप देश में औद्योगिक विकास की ओर ध्यान गया । रेल निर्माण से देश में निश्चित रूप से औद्योगिक युग का सूत्रपात हुआ था । बैंकिंग , बीमा आदि केन्द्र भी स्थापित हुए । प्रगति अति धीमी तथा बाधाओं से पूर्ण थी तथा निर्धनता और बेकारी पूर्ववत् थी । ग्रामीण वर्ग व्यवस्था इन प्रगतिशील साधनों से सर्वथा वर्धित थी । १९११ ई० में जमशेदपुर में टाटा द्वारा संचालित

१- २० वार० दसहं - सोशल बैंक ग्राउण्ड आफ इंडियन नेशनलिज्म

“ दि माहर्न मीन्स आफ ट्रांसपोर्ट वेयर एस्टेब्लिश्ड एण्ड एक्स्टेंडेड नोट प्रोग्राम दि पाब्लिक आफ व्यू आफ दि प्री, नौरमल, आल साइड्ड डवलपमेंट आफ दि इकनोमिक, सोशल, पोलिटिकल एण्ड कल्चरल लाइफ आफ दि इंडियन नेशन, बट प्राप्परीली टू सर्व दि इकनोमिक, पोलिटिकल एण्ड मिलिटरी इन्ट्रेस्ट्स आफ ब्रिटेन इन इण्डिया ।। ” पृ० ११६

२- २० वार० दसहं- सोशल बैंक ग्राउण्ड आफ इंडियन नेशनलिज्म

“ दि मिलिवन्स आफ एक्न्ड आर्टिस्न्स एण्ड ड्राफ्टमैन, स्मिथर्स, वेवर्स, पीटर्स, नेनर्स, स्मैल्डर्स, स्मिथ्स, एलाइज प्रोग्राम दि टाउन एण्ड प्रोग्राम दि विलेज , हेड नो वाल्टर नेटिस सेव टू आउड इन्टू एग्रीकल्चर । इंडिया बाय ट्रांसफोर्म्ड प्रोग्राम बींग ए कन्ट्री आफ कम्पाइड एग्रीकल्चर एण्ड मैनुफैक्चर्स इन्टू एव एग्रीकल्चरल कोलोनो आफ ब्रिटिश मैनुफैक्चरिंग केप्टलिज्म ।।

तोहि वीर फौलाद के कारखाने का शासन ने कोई प्रोत्साहन न देकर उसे हस्तगत करना चाहा किन्तु राष्ट्रीय बान्दोलन ने उसकी रक्षा की। सन् १९१४ के युद्ध के उपरान्त उसे प्राणदान मिला। कारखानों में काम करने वाला मजदूर वर्ग का वार्षिक स्तर निम्न तर था। वीर यह वर्ग वर्सगठित भी था क्योंकि उस की लाल श्रान्ति का पूर्ण समावेश उस वर्ग में नहीं हुआ था। प्रसाद युग में मजदूर संगठन तथा कृषक बान्दोलन की जागृति के निम्न प्रकट होने लगे थे।

वस्तुतः भारतीय उद्योग धन्धों के फल का प्रमुख कारण ब्रिटिश साम्राज्यवादी औपनिवेशिक वार्षिक शोषण नीति थी। वीरजो साम्राज्य के अन्तर्गत भारतीय कृषि राष्ट्रीय स्तर पर स्थित होते हुए भी वार्षिक दृष्टि से पिछड़ी हुई थी वीर न ही उत्पादन के क्षेत्र में प्रगतिशील थी।

गांधी जी ने राजनैतिक स्वातन्त्र्य बान्दोलन के अन्तर्गत कृषक तथा श्रमिक वर्गीय हितों को भी प्रोत्साहन दिया तथा देश के निर्धन कृषकों के लिए चरखा तथा सादी पर आधारित एक वार्षिक निर्माण योजना प्रस्तुत की। स्वदेशी बान्दोलनों ने एक पर्याप्त सीमा तक देशी उद्योग धन्धों में प्रगति का सन्निवेश किया तथा कुछ पूँजीपति वर्ग भी इसमें शामिल हो गया। किन्तु विदेशी नीति तथा विदेशी विनियम दर एक बाधा स्वल्प थी।

१- २० बार० देसाई- सोशल बैंक ग्राउण्ड आफ इंडियन नेशनलिज्म पृ० ७६

- १- फौसिंग वाफ ब्रिटिश प्री ट्रेड वीन इंडिया
- २- इम्पोजिंग हैवी ड्यूटीज वीन इंडियन मैनुफैक्चर्स इन इंग्लैंड
- ३- ट्रांसपोर्ट वाफ री प्रोडक्ट्स फ्राम इंडिया
- ४- ट्रान्सिट एण्ड कस्टम्स ड्यूटीज
- ५- ग्रीटिंग स्पेशल प्रिविलेज व दि ब्रिटिश इन इंडिया
- ६- बिल्डिंग रेलवेज इन इंडिया
- ७- कम्पैलिंग इंडियन वार्टिसन्स टू डिक्लर देयर ट्रेड सीडिट्स
- ८- होल्डिंग वाफ एग्जिजिन्स

सविनय अवज्ञा आन्दोलन ने कृषि समस्या को भी महत्व दिया था ।^१

निष्कर्षतः प्राचीन भारतीय ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था ब्रिटिश शासन के प्रभाव से बामूल परिवर्तित हो चुकी थी । ब्रिटिश साम्राज्यवादी आर्थिक शोषण भारतीय आर्थिक व्यवस्था के पतन का प्रमुख कारण थी ।^२

कंग्रेस ने राजनैतिक आन्दोलन के साथ साथ भारतीय श्रमिक तथा कृषि वर्गों की आर्थिक कठिनाइयों पर असीतोष प्रकट किया तथा आर्थिक व्यवस्था में सुधार का प्रस्ताव शासन के सम्मुख रखा । सुधार का अभाववात्क परिणाम स्वरूप कृषक तथा श्रमिक आन्दोलन राजनैतिक आर्थिक चेतना की दृष्टि से अधिक प्राणवान् तथा प्रभावशाली सिद्ध हुआ ।

१- २० वारं देसाई- सोशल बैंक ग्राउण्ड बाफ इंडियन नेशनैलिज्म पृ० ३४०

“ सिविल डिस्ओबिडन्स --- हेड ए ग्रेटर मास बेसिस देन दि मूवमेन्ट बाफ १९२० -२२ । दि पीजिन्ट्स --- हेड वालसो स्पोत्वड देयर वीन इन्डिपेन्डेन्ट पोलिटिकल एण्ड क्कनोमिक वीरगेनाइजन्स ।।

२- देसाई- सोशल बैंक ग्राउण्ड बाफ इंडियन नेशनैलिज्म पृ० ८१

“ दि पोलिटिकल प्रेशर बाफ ए फारेन गवर्नमेन्ट टू गेदर विथ दि क्कफल्क्स बाफ दि बीप प्रीटबट्स बाफ फारेन मशीन इन्डस्ट्री वेयर दि प्रिंसिपल कापेज बाफ दि डिक्लाइन एण्ड ठिके ।।

स्वतन्त्र राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं में शान्तिनिकेतन (१६००, बंगाल), गुरुकुल कांगड़ी (१६०२), गुरुकुल (वृन्दावन १६११), महाविद्यालय ज्वालापुर (१६०७) विशेष उल्लेखनीय हैं।

तत्कालीन युग में पाश्चात्य नवीन शिक्षा प्रणाली का प्राधान्य होते हुए भी व्यापक राष्ट्रीय चेतना को परिपुष्ट करने में राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का योगदान भी किसी प्रकार उपेक्षणीय नहीं है। यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि राष्ट्रीय शिक्षा का पुनरुन्मयन भी ब्रिटिश शासन की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ ।

पाश्चात्य शिक्षा के अतिरिक्त वाधुनिक प्रेस ने भी भारतीय राष्ट्रीयता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया । शासन द्वारा प्रेस की स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध तथा भारतीय निर्धनता, तथा भारतीय अशिक्षा तथा बार्थिक दृष्टि से ब्रिटिश तथा देश के पूँजीपतियों का कड़ा नियन्त्रण होते हुए भी प्रेस भारतीय राष्ट्रीय विचारों के प्रचार प्रसार का माध्यम बनी, तथा उसने समस्त देश में एक सूत्रता का बीजारोपण किया ।

१- डा० लक्ष्मीसागर वाष्णीय- हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी :

नए संस्करण पृ० ७३

२- ए० वार० देसाई- सोशल कैपिटल ग्राउण्ड वाफ इंडियन नेशनलिज्म दि

इन्ट्रोडक्शन वाफ माडर्न एजुकेशन इन इंडिया वाज ए प्रोग्रेसिव स्कट वाफ ब्रिटिश स्ल । स्ल वाज दि की पिच बोपेन्ड दि ग्रेट ट्रेजर्स वाफ रेशनलिस्ट एण्ड डेमोक्रेटिक थाट वाफ दि मोडर्न वेस्ट टू दि इंडियन्स ।। पृ० १४४

३- ए० वार० देसाई- सोशल कैपिटल ग्राउण्ड वाफ इंडियन नेशनलिज्म

“ दि प्रेस वाज ए पावरफुल वीफ इन दि डवलपमेन्ट वाफ इंडियन नेशनलिज्म एण्ड वाफ दि नेशनलिस्ट मूवमेन्ट ।। पृ० २११

(४) सामाजिक धार्मिक

१९ वीं शती में प्रचलित सामाजिक तथा धार्मिक सुधारवादी आन्दोलन राष्ट्रीय भावना से परिचालित थे तथा अन्त में उन्होंने अपना अस्तित्व राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में विलीन कर दिया। इन आन्दोलनों के महान् प्रवर्तकों ने भारतीय धर्म तथा समाज के उदात्त रूप का प्रचार कर राष्ट्रीय सम्मान में अभिवृद्धि की।

ब्रिटिश शासन काल में स्त्री शिक्षा का अभाव, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, विधवा विवाह निषेध, वर्णगत भेद भाव, अस्पृश्यता, स्नान पान सम्बन्धी प्रतिबन्ध, कुशाकृत की समस्याएँ राष्ट्रीय चेतना के उद्भावक महापुरुषों की विचलित किए हुए थीं। पश्चात्य आधुनिक सम्पर्क के परिणामस्वरूप कार्य समाज ने स्त्री शिक्षा के समर्थन तथा पर्दे की रीति के विरोध में आन्दोलन प्रसारित किया था। शिक्षा प्रसार के साथ नारी वर्ग में अधिकार भावना का भी अभ्युदय हुआ। सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों, कृष्णावर्ण तथा अन्ध विश्वासों के अन्त में स्त्री शिक्षा का अप्रतिम सहयोग रहा है। वस्तुतः सामाजिक तथा धार्मिक प्रगति के लिए राजनीतिक स्वतन्त्रता अत्यन्त आवश्यक थी। प्रत्येक राजनीतिक सुधार के साथ सामाजिक आन्दोलनों में भी गतिशीलता उत्पन्न हुई। राष्ट्रीय चेतना की ऊपरोंपर तीव्रता के साथ अनेक प्रकार की सामाजिक कुरीतियों का अन्त तथा भावी समाज व्यवस्था के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होता गया।

धार्मिक दौन में अन्ध विश्वास तथा कृीतियों के स्थान पर तर्क और बुद्धि की प्रधानता मिली । इस जागरण के भूल में नवीन शिक्षा तथा वैज्ञानिक आविष्कारों के फलस्वरूप उत्पन्न वैज्ञानिक दृष्टिकोण था । वाध्यात्मिक आन्दोलन की उग्रवादियों द्वारा समर्थन प्राप्त हुवा (तिलक, बरविन्द वादि) गीता का कर्मयोग सबको प्रभावित कर रहा था । गांधी जी ने राजनीति की वाध्यात्मिक तथा नैतिक गुणों से समन्वित कर मानवतावादी धर्म का प्रचार किया ।

(५) सांस्कृतिक

आलोच्यकाल में भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान का प्रयास विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है। बरविन्द गांधी, तिलक सदृश युग पुरुष मानवता की उन्नति के लिए सांस्कृतिक भूमि प्रस्तुत कर रहे थे । तत्कालीन सांस्कृतिक चेतना का मूल आधार जातीय गौरव तथा महान् अतीत की भावना का उदय है। भारतेन्दु युग में सांस्कृतिक राष्ट्रीयता प्रभुत्व थी, प्रसाद युग में उसी सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का विकास राजनीतिक राष्ट्रीयता में हुवा ।

अध्याय - ३

भारतवर्षीय राष्ट्रियता : प्रवृत्तियाँ

- १- राजभक्ति तथा ब्रिटिश शासन से असन्तोष
- २- स्वदेश प्रेम
- ३- गौरवपूर्ण अतीत का चित्रण
- ४- वर्तमान के प्रति शीम
- ५- प्रष्ट राजकीय व्यवस्था से असन्तोष
- ६- हिन्दी भाषा के प्रति अनन्य प्रेम
- ७- हिन्दू धर्म के प्रति अगाध निष्ठा

निष्कर्ष

अध्याय - ३

भारतेन्दु युगीन राष्ट्रीयता

भारतेन्दुकाલીन नाटकों में राष्ट्रीयता के अनेक भाव- देश भक्ति, कर्त्तव्य का गौरव गान, वर्तमान के प्रति चोम, तत्कालीन ब्रष्ट शासन प्रबन्ध से असंतोष, भाषा, संस्कृति तथा धर्म के प्रति अगाध निष्ठा का तथा अन्य राष्ट्र निर्माणात्मक भाव अपनी प्रारम्भिक रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। भारतेन्दुकालीन नाटकों में नवोदित भारत की नूतन आकांक्षाओं का जाग्रत स्वर प्रतिध्वनित हुआ है। इस युग में एक नई चेतना का सुन्पात और नई शिक्षा तथा पश्चिमी विचारों का प्रकाश तीव्रता से फैलना आरंभ होता है, एक लम्बी निद्रा के पश्चात् वैसे सोकर देश अपनी वास्तविकता का साक्षात्कार करता है। विप्लव के आकुल क्षणों में एक युग का अवनत होकर नये युग का आविर्भाव होता है।

भारतेन्दुयुगीन राष्ट्रीयता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

राजभक्ति तथा ब्रिटिश शासन से असंतोष

भारतेन्दु युगीन राष्ट्रीय भावना राज भक्ति से पूर्ण थी। वास्तव में प्रारम्भ में मुसलमानी व्यथाचार, उनके धार्मिक

पदापात तथा वराजकता पूर्ण शासन की अपेक्षा जनता की अंग्रेजी शासन अधिक श्रेयस्कर प्रतीत हुआ। विविध वैज्ञानिक आविष्कारों, उचित न्याय पद्धति तथा नवीन शिक्षा के बल पर अंग्रेजी साम्राज्य ने लोकप्रियता अर्जित कर ली थी। भारत-सु युग का बहुत सा साहित्य राजमन्त्रि के भावों से पूर्ण है इसका यही प्रमुख कारण है। उस समय देश प्रेम के साथ साथ राज-मन्त्रि का रंग गहरा था और अपनी देश जाति और संस्कृति से प्रेम करने वाले बड़े बड़े लोगों में भी राज मन्त्रि और कृतज्ञता के उद्गार निकलते थे।^१

स्वदेश प्रेम

स्वदेश प्रेम का सूक्ष्म अर्थ अपनी पुण्यभूमि की विशालता, गरिमा, प्राकृतिक सुश्रमा के प्रति अटूट आकर्षण का भाव है। भारत धर्मभूमि होने के कारण तत्कालीन युग में पर्वत, नदी, वृक्ष आदि देश के प्राकृतिक उपकरणों में देवत्व की प्रतिष्ठा स्थापित की गई है। भारतवर्ष के पर्वतों, नदियों तथा देव स्थानों का भी स्तवन किया गया है।

गौरवपूर्ण कर्त्तव्य का चित्रण

जिन नाटककारों ने देश प्रेम पर लेखनी दीढ़ाई है, उन्होंने प्राचीन भारत का गुण अवश्य गाया है। वस्तुतः देश की वर्तमान दौर्भाग्य पर परिस्थितियों से तादात्म्य स्थापित न कर पाने के

कारण नाटककारों का ध्यान अतीतीन्मुख हुआ । भारत के उज्ज्वल , भव्य एवं गौरवपूर्ण अतीत के चित्रण द्वारा वर्तमान अधोगति का बोध कराते हुए इन नाटककारों ने प्राचीन भारत के धर्म, इतिहास, संस्कृति तथा वीरत्व का गुणगान किया है।

वर्तमान अधःपतन के प्रति द्योम एवं सुधार की भावना

भारत के प्राचीन गौरव गान के साथ नाटककारों ने देश की अवनत दशा, उसके कारणों को निष्पक्ष भाव से निर्दिष्ट किया है। इन नाटककारों ने युगीन परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण करते हुए भारत की तत्कालीन सामाजिक नैतिक, बौद्धिक , मानसिक तथा वार्षिक अधोगति का सम्यक् विश्लेषण किया । तत्कालीन हिन्दू समाज में परि-व्याप्त अन्ध विश्वास, रुढ़ियाँ, बाह्याहम्बर, जाति भेद, बाल विवाह, बहु विवाह, विधवा विवाह निषेध, विदेशी यात्रा पर प्रतिबन्ध आदि कुरीतियाँ तत्कालीन नाटकों के निर्वाचित विषय थे ।

भ्रष्ट राजकीय व्यवस्था से असंतोष

तत्कालीन भ्रष्ट ब्रिटिश शासन प्रबन्ध का चित्रण करते हुए तत्कालीन नाटककारों ने वार्म्स एक्ट प्रेस एवं सदन काले कानूनों का विरोध किया है। दोषपूर्ण न्याय प्रणाली, पुलिस के अत्याचार तथा प्रशासक वर्ग के घूस लेने की प्रवृत्ति आदि निन्दा के विषय दीखे हैं ।

तत्कालीन नाटककार अंग्रेजी राज्य के सच्चे तथा कटु कालोन्क थे। भारतेन्दु ने अंग्रेजी राज्य की सभ्यता, नैकनीयता तथा जनतन्त्र का पर्दाफाश कर दिया।*

हिन्दी भाषा के प्रति जनन्य प्रेम

भारतेन्दु युग में भाषा समस्या एक ज्वलंत प्रश्न था। तत्कालीन नाटककार हिन्दी की दुर्दशा पर विशेष खेद प्रकट करते हुए हिन्दी को उसका उचित पद दिलाने के लिए प्रयत्नशील रहे। हिन्दी को राज कार्य तथा सामान्य व्यवहार दोनों रूपों में प्रयुक्त कराना तत्कालीन नाटककारों का प्रमुख ध्येय था। भारतेन्दु युग में हिन्दी का विरोध अंग्रेजी से नहीकर उर्दू फारसी से था। अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा बर्हि होने के पश्चात् हिन्दी तथा अंग्रेजी के मध्य संघर्ष उत्पन्न हुआ।

हिन्दू धर्म के प्रति लगाव निष्ठा

भारतेन्दुकालीन नाटकों में हिन्दू संगठन तथा हिन्दू उत्थान के भाव अधिक मिलते हैं। नाटककारों ने भारतवासी शब्द से केवल हिन्दू अर्थ ग्रहण करते हुए अहिन्दुओं के प्रति कीमल तथा सहिष्णु भाव प्रदर्शित नहीं किये। कहा जा सकता है कि तत्कालीन नाटककार हिन्दू थे अतः उनकी राष्ट्रीय भावना जातीयता तथा धार्मिकता से पूर्ण मुक्त न थी। तत्कालीन नाटककारों में हिन्दुत्व की भावना भिन्न रूपों में प्रकट होती है :

१- डा० रामविलास शर्मा- भारतेन्दु युग पृ० २१

२- डा० गोपीनाथ तिवारी- भारतेन्दुकालीन नाटक साहित्य पृ० २०७

१- हिन्दू समाज के गुण दोषों के उद्घाटन के रूप में

२- हिन्दू मुस्लिम संघर्ष के रूप में

३- गौरदा समस्या के रूप में

बनेक नाटक में गौरदा के प्रश्न पर हिन्दू मुस्लिम दंगे भी वर्णित हैं। भारतेन्दुयुगीन नाटक कारों ने मली भाँति जान लिया था कि जातीय एकसूत्रता के अभाव में राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्ति अत्यन्त कठिन है। अतः उन्होंने राष्ट्रीय भावों से प्रेरित होकर भारतीय जन गण में राजनैतिक एवं जातीय एकता के विकास का प्रयत्न किया। भारतेन्दुकालीन नाटक उद्बोधन तथा जागरण का संदेश देते हैं। देशोन्मत्ति की भावना से प्रेरित नाटककारों ने बालस्य, फूट, स्वार्थपरता तथा संकीर्णता आदि दुर्गुणों को त्यागने का उपदेश दिया। उस काल के नाटककार देश की परतन्त्रता को देखकर अत्यन्त दुःखी हो रहे थे। देश की स्वाधीन बनाने के लिए पुस्तक फर्शों का सहारा ले रहे थे। तत्कालीन राजनैतिक चेतना ने उन्हें अपने जन्म सिद्ध अधिकारों के प्रति जागरूक कर दिया था। उन्होंने अनुभव किया था कि इन समस्त अवनतियों का प्रमुख कारण पराधीनता है तथा पराधीनता से मुक्ति पार बिना अपमान तिरस्कार लज्जा तथा ग्लानि की भावना विलुप्त नहीं हो सकती। किन्तु राज भक्ति की भावना का पूर्णतः द्राघ न होने के कारण तत्कालीन युग में अंग्रेजी राज्य से पूर्ण विच्छेद की भावना बलवती नहीं हो पाई थी। तत्कालीन युग में स्वतन्त्रता से अर्थ केवल अधिक सुविधाएँ प्राप्त करना परस्पर समान समझा जाना तथा उन्नत जीवन की वशायें प्राप्त करने तक ही सीमित था।

तत्कालीन नाटककार साम्प्रदायिक विद्वेष से मुक्त थे क्योंकि मानवता के नाते इस्लाम मसीह या अन्य धर्मों से उन्हें द्रोह न था। यद्यपि भारतेन्दु युग में देश भक्ति तथा राज भक्ति दोनों स्वरूपों के दर्शन होते हैं किन्तु देश हित की भावना से अधिक प्रेरित होने के कारण देश भक्ति का स्वर राज भक्ति की अपेक्षा अधिक स्पष्ट तथा अधिक सुतर है।

निष्कर्ष

वस्तुतः भारतेन्दु युग राष्ट्रीयता की दृष्टि से शैशव काल था। राष्ट्रीयता के समग्र रूप के दर्शन तत्कालीन युग में नहीं होते। उत्कट देशानुराग की भावना से प्रेरित होते हुए भी विद्रोह के स्वर अधिक तीव्रता से सुतरित नहीं हुए हैं। देश प्रेम को व्यक्त करने की वाणी लिम्पिता तथा अवसादपूर्ण थी। उसमें उत्साह तथा आवेश का अभाव मिलता है।

फिर भी “यह महत्वपूर्ण तथ्य है कि भारतेन्दु युगीन नाटककारों ने नवोत्थान और नव जागरण की प्रेरणा लेकर नाटक की सप्ताहिक सन्दर्भ में एक बहुत बड़े क्षेत्र के रूप में लिया।”

तत्कालीन धार्मिक आन्दोलनों ने भी भारतेन्दु युगीन नाटक साहित्य को प्रभावित किया। १९ वीं शताब्दी के आरंभ में हिन्दू समाज व धर्म के सुधारकों ने विभिन्न धार्मिक आन्दोलनों के प्रचार

तथा प्रसार द्वारा वैचारिक क्रांति का उद्घोष करने में पूर्ण सहयोग दिया। सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के प्रादुर्भाव का दायित्व इन्हीं संस्थाओं पर था। इन्हीं धार्मिक तथा सांस्कृतिक वान्दोलनों ने राजनीतिक राष्ट्रीयता की भूमिका निर्मित की। इन सुधारकों के समक्ष तीन प्रश्न थे :

१- कृत्रिणों का मुक्त कण्ठ से गुणगान करने वाले तथा भारतीय संस्कृति का उपहास करने वाले पय प्रष्ट भारतीयों को सम्मार्ग पर लाना।

२- रुढ़ियों एवं बन्ध विश्वास के शिकार भारतीय सामान्य वर्ग के व्यक्तियों को जाग्रत करना।

३- ईसाई मिशनरियों के प्रभाव से अपने धर्म को विधूत होने से बचाने के लिए हिन्दुत्व की सुरक्षा का प्रयत्न।

“ धार्मिक वान्दोलनों की दृष्टि से १९ वीं शताब्दी का प्रारंभ काल भारतीय इतिहास में अधिक महत्वपूर्ण समय है। इसकी तुलना का एक ही समय और है, वह है बल्लभ, चैतन्य, रामानंद, भूर, तुलसीकाल। ”

इन धार्मिक वान्दोलनों से भारतेन्दु युगीन नाटक पूर्णतः प्रभावित थे। राजनीति के क्षेत्र में पर्वत के समान बटल ब्रिटिश साम्राज्य से कगल टक्कर ले रही थी। सामाजिक क्षेत्र में रुढ़ियों के बजर से कार्य समाज का लेवीकोवन (Laocoon) व्यर्थ ही जूम रहा था^१।

१- डा० गोपीनाथ तिवारी- भारतेन्दु कालीन नाटक साहित्य पृ० ६६

२- डा० नगेन्द्र- आधुनिक हिन्दी नाटक पृ० ४४

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपनी प्रसर प्रतिभा द्वारा हिन्दी साहित्य में विविधता, नवीनता एवं आधुनिकता का समावेश किया। उन्होंने देश हित की भावना से अनुप्रेरित होकर १८७३ ई० में 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' नामक पत्र निकाला जो 'कवि वचन सुधा' के नवीनरूप का ही विकास था। इससे उनके नितान्त आधुनिक दृष्टिकोण का परिचय मिलता है। भारतेन्दु युगीन राजनैतिक परिस्थिति में, साहित्यकारों ने राजभक्ति तो अवश्य प्रकट की किन्तु साथ ही स्वतन्त्रता, आर्थिक उत्थति सम्बन्धी मांग, अंग्रेजी राज्य के अन्तर्गत भारतवासियों के प्रति बर्ताव, भेद भाव और दुर्व्यवहार का विरोध, बराबरी का दर्जा मिलने की मांग, अंग्रेजी राज्य के कारण वैज्ञानिक साधनों के प्रचार से लाभ, सर्वत्र शान्ति स्थापित हो जाने के कारण अंग्रेजी राज्य के प्रति कृतज्ञता, जनसत्तात्मक प्रणाली मांग साहित्य में स्थान पाने लगी। वे मातृभाषा तथा स्वदेशी प्रचार के कटु समर्थक थे।

तत्कालीन नवजात चेतना के मूल में वैज्ञानिक साधन तथा नवशिक्षा, ये दो प्रधान कारण थे। साम्राज्य सुदृढ़ करने की दृष्टि से अंग्रेजों ने जो शिक्षा नीति ग्रहण की उससे भारतीय राष्ट्रीय चेतना की नवीन दिशा मिली। भारतेन्दु युगीन राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप प्रसूतः राजनैतिक और आर्थिक न रह कर धार्मिक और सामाजिक या केवल सांस्कृतिक था। हिन्दू उर्दू का संघर्ष और हिन्दी का राष्ट्र भाषा के रूप में जन्म भारतेन्दु युग की अपनी विशेषता है।

१- लक्ष्मीसागर वार्षिक- बीसवीं शताब्दी हिन्दी साहित्य, नर सन्दर्भ पृ० ११। "ए मन्थली जर्नल पब्लिश्ड कनेक्शन विथ द 'कवि वचन सुधा' कन्टैनिंग आर्टिकल्स ऑन लिटरेरी, साइन्टिफिक, पोलिटिकल एण्ड रिजिलीजियस सब्जेक्ट्स, एन्टीक्विटीज, रिब्यूज, ड्रामाज, हिस्ट्री, नोवल्स, पोलिटिकल सिलेक्शन्स, गोसिप, ह्यूमर एण्ड विट।"

वर्ध्याय - ४

प्रसाद के प्रमुख नाटकों में राष्ट्रियता का स्वरूप

प्रयोगकालीन नाटक

विकासकालीन नाटक

उत्कर्ष कालीन नाटक

ऐतिहासिक दृष्टिकोण

प्रमुख नाटकों में राष्ट्रियता का स्वरूप

राज्यकी

विशाल

वर्षातश्नु

कामना

जन्मजय का नागयज्ञ

एक घूंट

धुवस्वामिनी

राष्ट्रियता का घनीभूत स्फुरण

स्कन्दगुप्त

चन्द्रगुप्त

निष्कर्ष

व्याय - ४

प्रसाद के प्रमुख नाटकों में राष्ट्रीयता का स्वरूप

(१९१०-१९३३ ई०)

प्रसाद के नाटक साहित्य को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है :

- १- प्रयोगकाल - १९१०-१५ तक
- २- विकासकाल १९१५- २८ तक
- ३- उत्कर्णकाल १९२८ - ३३ तक^१

१- प्रयोगकालीन नाटक

संज्ञन (१९१०-११) , प्रायश्चित (१९१४) , कल्याणी परिणय (१९१२) और कल्याणालय (१९१२) प्रसाद के प्रयोगकालीन प्रारंभिक नाटक हैं। इनमें प्रसाद ने वैदिक, पौराणिक तथा ऐतिहासिक कथावस्तु के माध्यम से नाट्य शिल्प के विविध प्रयोग किए हैं। वस्तुतः इनमें राष्ट्रीय चेतना का किंचित् भी वाभास नहीं मिलता । इन नाटकों का महत्व ऐतिहासिक दृष्टि से स्वीकार किया जा सकता है। विषयवस्तु के चयन की दृष्टि से प्रसाद प्रयोगकाल में ही प्राचीन वैदिक, पौराणिक तथा ऐतिहासिक अवधिगण के प्रति वाकर्णित दिखाई देते हैं।

(२) विकासकालीन नाटक

प्रसाद के नाटकों के विकासक्रम का द्वितीय सोपान 'राज्यकी' नाटक के निर्माण से प्रारंभ होता है। इस काल के अन्तर्गत राज्यकी, विशास, वजातसहृ, कामना, जन्मजय का नागयज्ञ तथा एक छूट नाट्य कृतियाँ परिगणित की जा सकती हैं।

(३) उत्कर्षकालीन नाटक

प्रसाद की नाट्य कला का चरमोत्कर्ष स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त तथा ध्रुवस्वामिनी में दृष्टिगोचर होता है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण

प्रसाद परम्परागत भारतीय संस्कृति के शाश्वत स्वरूप की स्थिरता नहीं, बल्कि गतिशीलता के प्रति निश्चित रूप से वास्थावान् थे। यही कारण है कि सम-सामयिक राष्ट्रीय समस्याओं को उन्होंने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में उभारने का श्लाघनीय प्रयास किया है। प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों में देश के राष्ट्रीय जीवन में विदेशी पराधीनता जन्य विभीषणिकारें तथा देश के सांस्कृतिक गौरव के प्रति सहज आकर्षण का भाव परोक्ष रूप में प्रतिबिम्बित है। सांस्कृतिक नेतृता का राष्ट्रीयता की भावना से जन्मजात सम्बन्ध है।

प्रसाद युग में भारतीय जन-जीवन संघर्ष की

स्थिति से गुजरते हुए भी व्यापक दृष्टिकोण के निर्माण में संलग्न था। पाश्चात्य ज्ञात के सम्पर्क के परिणामस्वरूप जनतन्त्र वाद, नवीन वैज्ञानिक शिक्षा नारी आन्दोलन तथा समानाधिकार देश में प्रसारित हो रहा था। भारतीय शिक्षित वर्ग ने अपनी अपूर्व समन्वयात्मक शक्ति, तर्क-बुद्धि तथा सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना के विकास में अमिट छाप छोड़ी। गांधी जी का असहयोग आन्दोलन राजनीतिक दृष्टिकोण समन्वित होते हुए भी सांस्कृतिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक चेतना से विमुक्त न था। विश्ववैधुत्व, मानवैक्य, तथा जाति एकता का वादशं गांधी, एबीन्द्र, बरविन्द की वाणी में प्रतिबिम्बित हो रहा था। गांधी युगीन राष्ट्रीयता भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण कर चुकी थी तथा उसकी दृष्टि में जातिभेद, रंगभेद, धर्मभेद का कोई स्थान शेष नहीं रह गया था। आधुनिक समस्याओं के निराकरण हेतु प्रसाद ने भारतीय इतिहास के उन प्रेरक प्रसंगों को नाटक रूप में अवतारणा की है जो वर्तमान पराधीन परिस्थितियों में राष्ट्रीय प्रेमान्ध्र को प्रज्वलित करने में पूर्ण सक्षम हैं।

वर्तित से विमुक्त राष्ट्र का कोई भविष्य नहीं होता। वर्तित पर गर्व करने वाले राष्ट्र में यह क्षमता ही होनी चाहिए कि वह अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए अपने वर्तित का सदुपयोग कर सके। 'कामना' तथा 'एक छूट' को झोड़कर प्रसाद के समस्त नाटक ऐतिहासिकता को आधार मानकर बने हैं। उनकी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशित क्षेत्र में से उन प्रकाण्ड घटनाओं का दिग्दर्शन करने की है जिन्होंने हमारी वर्तमान स्थिति का निर्माण करने में पर्याप्त योगदान दिया है। भारतीय इतिहास में यह तब बिसरे राष्ट्रीय सूत्रों का गठन करने का अथक प्रयास

तथा उन सूत्रों का तर्कपूर्ण विचार विश्लेषण मनन प्रसाद के नाटकों की महत्वपूर्ण विशेषता है जो अन्यत्र दुर्लभ है। इतिहास का गंभीर अध्ययन, प्रसंग परीक्षण की बुद्धि, तथा उपलब्ध इतिवृत्तों में उपयुक्त सूक्त स्थापित करने की वद्वुत क्षमता प्रसाद के नाट्य साहित्य में दर्शनीय है। प्रसाद के नाटक इतिहास के संदेशवाचक रूप में प्रस्तुत हुए हैं। उनके ऐतिहासिक अनुशीलन की गहनता उनके ऐतिहासिक वर्णनों से प्रकट होती है। स्वदेश व प्रकृति के प्रति सहज आकर्षण इतिहास का वाक्य पाकर उनके नाटकों में अधिक सुसर हो उठा है।

भारतीय इतिहास का प्रामाणिक रूप वर्णित करते हुए प्रसाद ने तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन, साम्प्रदायिकता, मौलिक स्वतन्त्रता तथा सामाजिक चेतना का प्रत्यक्ष किया है। उनके नाटकों में इतिहास का उपयोग विभिन्न अभिप्रायों से किया गया -

१- भारतीय अतीत की मुख्य भावों तथा भारतीय धर्म व संस्कृति के गौरव गान के लिए

२- इतिहास के विराट् रंगमंच पर सुख- दुःख, जय- पराजय, उत्थान पतन के मध्य प्रवासित मानव जीवन के चित्रण के लिए

३- ऐतिहासिक संदर्भों में युगीन समस्याओं का निराकरण कर वर्तमान में समाधान प्रस्तुत करने के लिए ।

४- राष्ट्रीयता , भाषात्मिक तथा साम्प्रदायिक
स्कृति का संदेश देने के लिए ।

५- अन्तर्राष्ट्रीयता का अनुमोदन करके विशुद्ध
मानवतावाद की प्रतिष्ठापना के लिए ।

६- युद्धकालीन संघर्ष को दूर कर शांति स्थापना
के लिए ।

बीसवीं शताब्दी में भारतेन्दु गुप्त की सांस्कृतिक
राष्ट्रीयता के संकल्पित रूप का विकास हुआ । अंग्रेजों में जीवन तथा
जाग्रति के प्रवेश के साथ राजनैतिक राष्ट्रीयता की भावना को समुचित
स्थान मिला तथा राष्ट्रीयता के उभय पक्षों सांस्कृतिक तथा राजनैतिक
को सशक्त अभिव्यक्ति मिली । बालीयकालीन साहित्य वाशा, कर्म,
जीवन, जाग्रति , बल और बलिदान की वाक्यांशों से व्याप्त है।
तत्कालीन राष्ट्रीयता की पूर्ण अभिव्यक्ति प्रसाद के समान किसी अन्य
नाटककार में उपलब्ध नहीं होती । प्रसाद के नाटकों का उपजीव्य ही
भारतवर्ष है।

“ प्रसाद के लिए देश उनसे कहीं अधिक सत्य
है जिस देश में पूजा हमारे राजनैतिक नेता करते हैं। भारत की सारी
प्रकृति, भारत की सारी वाध्यात्मिक निष्ठा, भारत के नगर ग्राम,
भारत के नर नारी, भारत के कला विज्ञान के सपने, सब उनके स्वप्न में
कुछ ऐसे सतरंगी रंगों में मिल जाते हैं कि उनकी देश की कल्पना व्यापक
बन जाती है। ”

१- डा० रामरत्न मटनागर- प्रसाद के नाटक पृ० ३३६

इतिहास तथ्यों का एक वस्तुस्थिती पैर होता है, साहित्य उसमें प्राणों का स्फुटन करता है। प्रसाद ने ऐतिहासिक वस्तुस्थिती को सजीवता प्रदान की है। उनकी ऐतिहासिक नाट्य कृतियों का उद्देश्य भारत के स्वर्णिम अतीत की ज्योति को सदैव उदीप्त रखना है।

प्रसाद के प्रमुख ऐतिहासिक नाटकों में

राष्ट्रीयता का स्वप्न

(१) राज्यप्री (१९१५)

प्रसाद के लगभग सभी नाटक बौद्ध धर्म के उत्कर्ष तथा अपकर्ष के सूचक हैं। उनके ऐतिहासिक नाटकों में धार्मिक समस्याएँ राजतन्त्र से उलझती चलती हैं।

‘राज्यप्री’ नाटक की रचना द्वारा प्रसाद ने भारतीय सांस्कृतिक पहचान की ओर इंगित किया है। गांधीवाद से प्रभावित होने के कारण प्रसाद ने शस्त्र युद्ध के स्थान पर अहिंसा, कठुणा उदारता की श्रेष्ठता प्रदान की है। भारत प्राचीनकाल से दानवीरों की प्रसव भूमि रहा है। सर्वस्व त्याग भारतीय महान् पुरुषों का विशेष गुण है। जिनो यात्री-मुनि ज्योति की हर्षा द्वारा सर्वस्व दान का देव दुर्लभ दृश्य देखकर यह विश्वास हो गया था कि अमिताभ की प्रसवभूमि यही हो सकती है। यह राष्ट्रीय गौरव के पदों की उज्ज्वल करता है। भारतीय

दानवीरता का परिचय प्रसाद के 'राज्यप्री' नाटक में उपलब्ध होता है। उनका वादश भारतीय संस्कृति के महत् वाध्यात्मिक तत्त्वों क रूपा, बहिष्ता, धर्म निरपेक्षाता की ओर विश्व को वाकृष्ट करना था। उनकी दृष्टि प्राचीन भारत की अगाध वैभवशास्त्रि परम्परा पर केन्द्रित रही है तथा अपने युग की सामयिकता के सन्दर्भ में उसका यशोगान अमिष्रित रहा है। उन्होंने राष्ट्रीयता का सच्चा वादश राज्यप्री के मुख से व्यक्त कराया है- ' माई। यहाँ त्याग का प्रश्न नहीं है। यह लोक सेवा है। ऐसा राज्य करने का वादश वायार्विर् की ही उचम्री है। '

हर्ष तथा राज्यप्री नैतिकता के ज्वलन्त प्रतीक हैं। सुख च्वांग भी भारतीय नैतिकता का प्रसिक है। वह राज्यप्री से कहता है- ' मुझे वरदान दो कि भारत से जो कुछ मैंने सोसा है वह जाकर अपने देश में सुनाई । '

भारतीय नैतिक उत्कर्ष की प्रसाद ने सर्वत्र निश्चित किया है। नैतिकता विहीन राष्ट्रीयता उच्छ्वस्त हो जाती है। प्रसाद गांधी जी से प्रभावित होने के कारण राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्ति के उग्र साधनों को हिंसक मानते थे। किन्तु जीवन के इस सर्वतोदार पक्षीय दृष्टिकोण को अपनाते हुए भी वे वातताइयों के सन्मुख नतमस्तक होने की भी शिक्षा नहीं देते।

विशाल (१९२१)

' विशाल ' नाटक के रचनाकाल में गांधी जी का

सत्याग्रह बान्दीसु देशव्यापी बन गया था ।^१ विशाल नाटक में तत्कालीन राष्ट्रीय अभिव्यक्ति प्रचुरता से उपलब्ध होती है। जलियाँवाले बाग की नृसंहार घटना घट चुकी थी। देश रौलट स्वेट, गवर्नमेण्ट आफ इंडिया स्वेट तथा प्रेस स्वेट के विरोध के लिए उत्पन्न था, तथा हिंसक तरीकों को खफाने के पक्ष में क्रान्तिकारी वर्ग सक्रिय हो उठा था। रौलट बिल की प्रतिक्रिया स्वल्प महात्मा गांधीका भारतीय राजनीति में प्रादुर्भाव हो चुका था। किन्नर नर देव के अत्याचारों के रूप में प्रसाद ने विदेशी सत्ता के अमानुषिक अत्याचारों का उल्लेख किया है। प्रसाद के प्रमानन्द गांधी जी के प्रतिरूप हैं। वे हिंसा को पार्श्विक वृत्ति मान कर सविनय निवेदन द्वारा हृदय परिवर्तन की नीति में विश्वास रखते हैं। उनका व्यक्तित्व नाटक को युगीन चेतना से सम्पृक्त करता है। सन् १९२१-२२ के असहयोग बान्दीसु के समय गांधीवाणी का आभास प्रमानन्द के कथनों में द्रष्टव्य है, “ सत्य को सामने रखो, आत्म बल पर भरोसा रखो, न्याय की मांग करो। ” वे विश्वास से कहते हैं - “ प्रतिहिंसा पार्श्व वृत्ति है। पाप से नहीं पापी से घृणा करो। ” इसी नीति पर नरदेव की रक्षा के अग्नि में प्रविष्ट होकर करते हैं। भारतीय अध्यात्मवाद के पूर्तिमान स्वल्प साधु प्रमानन्द भारतीय अध्यात्म की व्याख्या करते हैं, “ मैं शाश्वत संघ का अनुयायी हूँ। प्रेम की सत्ता को संसार भर में जगाना मेरा कर्तव्य है। ” सत्कर्म हृदय को विशाल बनाता है और हृदय में उच्च वृत्तियाँ स्थान पाने लगती हैं। इसीलिए सत्कर्म कर्म योग को आदर्श बनाना, आत्मा की उन्नति का मार्ग स्वच्छ और प्रशस्त करना है।^४

१- विशाल - पृ० ७७

२- ,, पृ० ६२

३- ,, पृ० ३०

४- ,, पृ० ६८

वे कूरता की घृणित मान कर सनावानों से शक्ति का सदुपयोग करने का आग्रह करते हैं, “ सत्ता शक्तिमानों को निर्बलों की रक्षा के लिए मिली है, वीरों को डराने के लिए नहीं । ” शासन के मून्धारों को सदैव दीन हीन जनता की सुरक्षा हेतु तत्पर रहना चाहिए ।

ब्रिटिश शासन काल में सर्वत्र अन्याय का साम्राज्य था । तत्कालीन जीवन पशुवत् और मरण से भी निकृष्ट हो गया था । न्याय व्यवस्था, पक्षपातपूर्ण थी । विशास बन्दी रूप में न्यायालय में प्रस्तुत किए जाने पर न्यायिक पद्धति पर व्यर्थ करता है, “ मैं नहीं जानता कि उस समय क्या उत्तर दिया जाता है, जबकि अभियोग ही उल्टा हो और जो अभियुक्त हो, वही न्यायाधीश हो । ”

“ विशास ” नाटक का अध्ययन करने पर नैर्जी के सम्मुख एक ऐसे भारत का चित्र मूर्तिमान हो उठता है जब पतनीन्मुख बौद्ध धर्म का हृत गति से ड्रास हो रहा था । इन पतनशील बौद्धों के विरोध में हिन्दू धर्म का पुनरुत्थान हो रहा था जिसके प्रतिनिधि प्रेमानन्द हैं।

संक्षेप में “ विशास ” नाटक में गांधीवादी विचारधारा का परिपुष्ट स्वरूप दर्शनीय है। प्रेमानन्द के माध्यम से प्रसाद ने सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया, करुणा और शान्ति का संदेश प्रसारित कर मानवतावाद की प्रतिष्ठापना की है। वे राजा नरदेव की प्रजा के प्रति पुनवत् व्यवहार करने की शिक्षा देते हैं, “ क्या राजा प्रजा का पिता नहीं है, जो एक बार उसका मजलना नहीं संभाल सकता । ”

१- विशास पृ० ४१

२- .. पृ० ६४

३- .. पृ० ७५

‘विशास’ नाटक में तत्कालीन युग के त्रुटिपूर्ण वर्णों के राजनीतिक, सामाजिक, तथा धार्मिक जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है। नाटक का कथानक युगीन राष्ट्रीय अभिव्यक्ति से सम्पृक्त है। प्रसाद ने राज्य कर से मुक्त जमींदारियों के उपयोगी महन्तों और भिक्षुओं की तिरस्कृत दृष्टि से देखा है। वे समानता की भावना के पीछे थे। ‘विशास’ नाटक में साधु प्रमानन्द के प्रयास से नरदेव सदृश अधम व्यक्ति में नैतिक गुणों का संसार होता है।

वजातशत्रु (१९२२)

‘वजातशत्रु’ नाटक का संघर्ष राजकीय है। इस नाटक में बुद्ध के जीवन काल की समस्त राजनीतिक धार्मिक तथा सांस्कृतिक परम्पराओं को समेट लिया गया है। नाटक में सर्वत्र क्रान्ति का विकट घोरण व्यक्त होता है। यह क्रान्ति निम्न वर्गों में है :

- १- राजनीतिक - राजाओं के विरुद्ध राजकुमारों की क्रान्ति
- २- सामाजिक - वभिजात वर्ग के विरुद्ध निम्न वर्ग की क्रान्ति
- ३- धार्मिक - रुढ़िवाद के विरुद्ध सुधारवाद की क्रान्ति
- ४- कौटुम्बिक - पुरुषों के विरुद्ध स्त्रियों की क्रान्ति

प्रसाद ने उपरोक्त क्रान्तियों का सम्यक् समाधान भी प्रस्तुत किया है। राज्य क्रान्ति का समाधान मल्लिका के शब्दों में-

“ कामा से बढ़कर दण्ड नहीं है और वाक्की राजनीति इसी का अवलम्बन करे । ”

धर्मशान्ति का समाधान गीतम के शब्दों में , “ हम अपना कर्णव्य करना चाहिए । दूसरों के मलिन कर्मों को विचारने से चित्त पर मलिन डाला पड़ती है। शुद्ध बुद्धि की प्रेरणा से सत्कर्म करना चाहिए । ”

प्रसाद के विचार में किसी दिव्य शक्ति के समान नतमस्तक होना सुसंस्कार का लक्षण है। वे गांधी जी के समान सशस्त्र श्रुति में विश्वास न रखकर हृदय परिवर्तन की नीति में विश्वास रखते थे । नाटक का वायान्त अवलोकन करने पर विदित होता है कि विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान प्रसाद की कठुणा, बहिष्ता और विश्वमैत्री में मिलता है। और उसी का संदेश वे नाटक में देते हुए प्रतीत होते हैं। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं :

१- मानवी सृष्टि कठुणा के लिए है। यों तो क्रूरता के निवर्गन हिंस्र पशु जगत् में क्या कम है ? (कठुणा)

२- मनुष्य होना राजा होने से अच्छा है । ”

(मानवतावाद)

३- वाक् सीयम विश्वमैत्री की पहली सीढ़ी है । ”

(विश्वमैत्री)

१- अजातशत्रु - पृ० ७७ १२३

२- “ “ ७४ ६४-६५

३- “ “ ७० २४

४- “ “ २४

५- “ “ ३०

(४) स्वर्ण और रत्नों का बाली पर बड़ा गैरहवा है, जिससे मनुष्य अपना अस्थि चर्म का शरीर तक नहीं देखे पाता ।
(भौतिक वाकर्षण में फँसकर मनुष्य आत्म ज्ञान से विमुक्त हो जाता है।)

प्रसाद ने वर्तमान राजनीति को सदैव सामा तथा निरपेक्ष न्याय का आधार ग्रहण करने का सर्वत्र परामर्श दिया है।

प्रसाद ने "वजातशतृ" नाटक में तत्कालीन राज-नीतिक दुरवस्था का चित्र वर्णित किया है, " हमलोग उस अत्याचारी राजा को कर न देंगे, जो अधर्म के बल से पिता के जीते जी ही सिंहासन छोड़ कर बैठ गया है और जो पंडित प्रजा की रक्षा भी नहीं कर सकता । "

ब्रिजजी शासन के कर भार के वाधिक्य से भारतीय कृषक अत्यधिक चिन्तित हो गया था । जमींदारी प्रथा के प्रचलन से कृषक का वार्षिक शोषण निरन्तर बढ़ता ही जा रहा था। प्रसाद ने राष्ट्रीयता के विकास में बाधक तत्व भेद भाव पर वृद्धांत किया है, " राष्ट्र भेद करके क्या देश का नाश करना चाहते हैं। प्राचीन अन्ध विश्वासों को प्रसाद ने भर्त्सना की है तथा उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग के भेद का उन्मूलन किया है- " यह दम्भ तुम्हारा प्राचीन संस्कार है। यह झूठे बड़े का भेद क्या अभी इस संकीर्ण हृदय में इस तरह घुसा है कि निकल नहीं सकता । क्या जीवन की वर्तमान स्थिति देखकर प्राचीन अन्ध विश्वासों को जी न जाने

१- वजातशतृ- पृ० ३८

२- " " पृ० १२३

३- " " पृ० ५६

४- " " पृ० ३३

किस कारण होते बार है, तुम बदलने के लिए प्रस्तुत नहीं हो^१।

वजातशतृ नाटक में विदेशी शासन का प्रतिरूप है,
 “राज्य करष मैं न दूंगा- यह बात जिस जिह्वा से निकली, बात के
 साथ वह भी क्यों न निकाल ली गई^२। विदेशी सत्ता का इतना कड़ा
 नियन्त्रण तत्कालीन निरक्षर शासन का रूप साकार कर देता है।

‘विशास’ के विपरीत ‘वजातशतृ’ नाटक में
 बौद्ध धर्म की व्यापकता तथा बुद्ध के महान् व्यक्तित्व का प्रत्यक्ष मिलता
 है।

प्रसाद ने सामाजिक जीवन में वर्ण-सर्वण की
 समस्या को भी प्रस्तुत किया है। हिन्दू समाज में बुजुर्गों के जो अधिकार
 चले आए हैं उन्हें त्यागने को वे कदापि प्रस्तुत नहीं हैं- “अधिकार चाहे
 वे कैसे भी जर्जर और हल्की नींव के हों तथावा अन्याय से ही क्यों न संग-
 ठित हों, सहज में नहीं छोड़े जा सकते^४।”

पुरातन पीढ़ी युवा वर्ग को अपने अधिकार सौंपने
 में उच्छ्वसता के भय से हिचकतो है, “नवोन रक्त राज्यी को सदैव
 तलवार के दर्पण में देखना चाहता है^५।”

१- वजातशतृ - पृ० १२५

२- .. पृ० ५६

३- .. पृ० १२५

४- .. पृ० ६१

५- .. पृ० ३१

प्रसाद ने प्राचीन राजतंत्रीय पद्धति के विरोध में नवीन स्वरों का उद्घोष किया है- “ क्या यह पुरानी और नियंत्रण में बंधी हुई, संसार के कोप में निमज्जित राजतंत्र की पद्धति नवीन उद्योग को असफल कर देगी। ”

“ जिस राष्ट्र और समाज से हमारी चुस्त शक्ति में बाधा पड़ती हो, उसका हमें तिरस्कार करना ही होगा। ”

प्रसाद युगिन भारत में सामाजिक परिवर्तन उभरने लगे थे। प्रसाद युग में क्रान्तिकारी सामाजिक चेतना की भावना समाविष्ट हो चुकी थी जिसे प्राचीन के विरोध में वर्तमान का विद्रोह अथवा पुरातन पीढ़ी के विरोध में युवा वर्ग का विद्रोह कहते हैं।

सांस्कृतिक चेतना को प्रसाद ने राष्ट्रीय स्मृति के लिए प्रयुक्त किया है। प्रसाद की सांस्कृतिक चेतना परम्परा, जनैतिकता तथा स्मृति से मुक्त विश्व मैत्री का भाव व्यक्त करती है- “ विश्व के कल्याण में अग्रसर हो अस्तित्व दुःखी जीवों की हमारी सेवा की आवश्यकता है। इस दुःख समुद्र में कूद पड़ी। यदि एक भी रोते हुए हृदय को तुमने हँसा दिया तो सैकड़ों स्वर्ण तुम्हारे अन्तर में विकसित होंगे। ”

प्रसाद राष्ट्र को सदैव समुन्नत देखने के अभिलाषी रहे हैं, उनका विश्वास था कि “ मगध का राष्ट्र सदैव गर्व से उन्नत रहेगा और विरोधी शक्ति पद दलित होगी। ” उनके विचार में राष्ट्र

१- अजातशत्रु- पृ० ६१

२- “ “ पृ० १२६

३- “ “ पृ०

४- “ “ पृ० ६२

के प्रत्येक नागरिक को राष्ट्र की उन्नति हेतु प्रयत्नशील रहना चाहिए क्योंकि राष्ट्र का उद्धार करना भी भारी परीष्कार है। तत्कालीन प्राणीत्सर्ग की वदम्य भावना के वीरता व्यंजक स्वर्ण की अभिव्यक्ति से नाटक परिपूर्ण है- “वीर हृदय युद्ध का नाम हो सुन कर नाच उठता है, शक्तिशाली भुज दण्ड फड़कने लगते हैं। प्रसाद के सम्मुख “भारतीय वीर तलवार की धार है, अग्नि की भयानक ज्वाला है और वीरता के वरेण्य दूत है। वीर प्रशस्ति के ऐसे अनेक उद्गार प्रसाद के नाटकों में उपलब्ध होते हैं। “राष्ट्र के कल्याण के लिए प्राण विसर्जन किया जा सकता है और हम सब ऐसी प्रतिज्ञा करते हैं। उन्होंने प्रस्तुत नाटक में मादक द्रव्य निषेध सम्बन्धी रचनात्मक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया है। गौतम मादक द्रव्यों को निषिद्ध बताते हैं। प्रसाद ने गणतन्त्र के समर्थन में राजतन्त्र की निरक्षुब्ध प्रणाली का विरोध किया है।

निष्कर्षतः जब “वजातशत्रु” नाटक में सामयिक राष्ट्रीय, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण विशेष रूप से राजनीतिक स्वातंत्र्य तथा नारी स्वातंत्र्य पर उद्भूत विचारों में परिलक्षित होता है। वजातशत्रु के निरक्षुब्ध शासन के विरोध में काशी की प्रजा का कर न देना प्रजातन्त्र के भाव का प्रतिनिधित्व करता है।

१- वजातशत्रु- पृ० ६३

२- ,, ७०

३- ,, ७९

४- ,, ६३

५- ,, ४४

६- ,, ६९

कामना (१९३३-३४)

‘कामना’ प्रसाद की सर्वथा मौलिक प्रतीकात्मक संस्कृति प्रधान नाट्य कृति है। इसमें उनकी कल्पना को कथावस्तु के निर्माण में पूर्ण स्वतन्त्रता मिली है क्योंकि इसमें अन्य नाटकों की तरह इतिहास का बन्धन नहीं है।

‘कामना’ की रचना का समय भारत में गांधी के उपदेशों द्वारा नव जागरण का युग था जिसमें रुई का बोटन, चरखा कातना, कृषि कार्य में सहयोग देना तथा त्याग तपस्या, संयम तथा परिश्रम पूर्ण जीवन का महत्व प्रतिपादित किया जा रहा था। धनी मानी व्यक्ति कामिनी, कचिन तथा कादम्बरी से विरत होकर राष्ट्र निर्माण के कर्मठ सेनानी बन रहे थे। सबके हृदय में यही कामना थी कि हम स्वतन्त्र और सुखी हों तथा विदेशी बन्धन से मुक्त होकर प्रकृत जीवन यापन करें। ‘कामना’ नाटक के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि गांधी जो आधुनिक पश्चात्य मौलिक सभ्यता के जिस कृत्रिम जीवन से मानव जाति को सचेत कर रहे थे, वह प्रसाद को भी अप्रिय था। जीवन के समस्त प्रश्नों के मूल में अर्थ की प्रधानता होने के कारण मानव इतना लोभुप हो गया है कि हिंसा तथा रक्तपात को एक साधारण कृत्य समझता है। ‘कामना’ नाटक की रचना का प्रधान उद्देश्य पश्चात्य विनाशक सभ्यता तथा शासन प्रणाली के दोषों का उद्घाटन करना है।

‘कामना’ नाटक विध्वंसात्मक दृष्टिकोण से

परिचाहित है। यह भारत में नवीन भौतिक सभ्यता के आगमन का सजीव चित्र प्रस्तुत करता है। प्रसाद ने नवीन संस्कृति की विविध दशाओं तथा तत्त्वन्तर्गत दुःख-स्थितियों का सफल चित्रण करके आधुनिक सभ्यता पर व्यंग्य किया है। नाटक का स्वर नीतिवादी है, किन्तु अन्त में किसी भी व्यवस्था का संकेत नहीं दिया गया है। कामना राजनैतिक व्यूहाचारों से दुःखी होकर कहती है, “यदि राजकीय शासन का अर्थ हत्या और व्यूहाचार है, तो मैं व्यर्थ रानी नहीं बनना चाहती। मेरी प्रजा उस बर्बरता से जितनी शीघ्र छुट्टी पावे उतना अच्छा।” गंधी का प्रतिरूप विवेक युक्तों से कहता है, “हम लोगों को भाई सम्मेलन कर फिर भाव की स्थापना करो और इनके व्यूहाचारों से रक्षा करो। हम परस्पर एक दूसरों के सहायक हों।” यहाँ प्रसाद का तात्पर्य हिन्दू मुस्लिम ब्राह्मण-भाव स्थापित करके संगठित रूप से व्यूहाचारी शासन का विरोध करने से है। प्रसाद ने स्वर्ण तथा मदिरा के प्रसार को राष्ट्रीय पतन का प्रमुख कारण माना है।

“कामना” नाटक में प्रसाद ने प्रतीकात्मक पात्रों की जरूरत भिन्न पर मानव जाति की सभ्यता और संस्कृति के विकास तथा ह्रास का इतिहास वर्णित किया है।

१- कामना - पृ० ६७

२- .. पृ० ६२

३- .. पृ० १३

जनमेजय का नागयज्ञ (१६२६)

प्रसाद ने पौराणिक कथानक को युगीन

प्रश्नों- स्वतन्त्रता संग्राम, नारी स्वातंत्र्य तथा जातीय गौरव से संबद्ध करके राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया है। नागी तथा वार्यों का शान्तिपूर्ण समाहार तत्कालीन हिन्दू मुस्लिम वान्तर्हित संघर्ष के समन्वय के रूप में चित्रित किया है। प्रसाद ने इस नाटक द्वारा जातीय स्वाभिमान को जाग्रत करने का अभिनव प्रयास किया है। परतन्त्र भारतवासियों के लिए यह उचित उद्बोधना पूर्ण है- “ नाग मरना जानते हैं, अभी वे पौरुष होन नहीं हुए हैं। जिस दिन वे मरने से डरने लगेंगे, उसी दिन उनका नाश होगा। जो जाति मरना जानती रहेगी, उसी को इस पृथ्वी पर जीने का अधिकार रहेगा। इस नाटक के अध्ययन से जाति प्रेम तथा देश प्रेम की भावना का उत्प्रेक होना स्वाभाविक है। प्रसाद ने तत्कालीन युग में शासक तथा शासित वर्ग के प्रति सौमनस्य की भावना जाग्रत करने का प्रयास किया है, “ जब राजा अपनी प्रजा का, अपनी राष्ट्र का वैभव बढ़ा रहा हो, तब उसका वादर करना भी उसकी प्रजा का धर्म है। ”

अंग्रेजी राज्य की सेवा में नियुक्त हिन्दू अधिकारी वर्ग के प्रति प्रसाद ने तीव्र व्यंग्य किया है--- “ राज सम्पर्क हो जाने से इसी छड़ड़ी मांस के मनुष्य अपने को किसी बड़े प्रयोजन की वस्तु समझने लगते हैं। उन्हें विश्वास हो जाता है कि हम किसी दूसरे जात के हैं। ”

१- जनमेजय का नागयज्ञ - पृ० ६६

२- .. पृ० १६

३- .. पृ० ४५

प्रसाद ने नाटक में ब्रासण - दानिय संघर्ष प्रस्तुत करके तत्कालीन ब्रासण समाज की स्वार्थी प्रवृत्ति का उद्घाटन किया है। साथ ही दानियों पर उनका असाधारण तथा अमिट प्रभाव भी वर्णित किया है। अश्वमेध यज्ञ तथा ऐन्द्रमहाभिषेक की प्रथा के पीछे राष्ट्रोत्थान तथा जातीय गौरव की प्रस्थापना का उद्देश्य निहित है। पराधीन नाग जाति के विद्रोहात्मक विचारों के माध्यम से प्रसाद ने सामयिक जन वाणी की सम्यक् अभिव्यक्ति दी है। उनका विश्वास है कि " जो जाति मरना जानती रहेगी, उसी को इस पृथ्वी पर जीने का अधिकार रहेगा । "

गंधी वादी विचारधारा के प्रभावस्वरूप नाटक में समस्त सृष्टि की एक प्रेम की धारा से बहने तथा अनन्त जीवन लाभ करने की मंगल कामना की गई है। प्रसाद ने संपूर्ण मानव शक्ति का वादार्थ प्रस्तुत किया है, सरमा के शब्दों में - " मैं तो एक मनुष्य जाति देसती हूँ, न दस्यु और न वार्य । "

निकर्ण रूप में प्रस्तुत नाटक तात्कालिक राजनैतिक आन्दोलन, नारी स्वातंत्र्य एवं जातीय स्वाभिमान की भावना के पोषण में पूर्ण सक्षम है।

१- जनमेजय का नाग यज्ञ पृ० ६३

२- " ८-१३

३- " ५० ३१

स्कूट (१९२६)

‘ स्कूट ’ स्कूटि में प्रसाद के जीवन सम्बन्धी विचार मात्र हैं। जिसमें उन्होंने वानन्दवाद का समर्थन किया है। साथ ही उनकी धारणा प्रणय सम्बन्ध में बदल गई थी। पहले उन्होंने चिर कौमार्य या प्रेम व्यापार का ही प्रतिपादन किया था किन्तु उन्होंने अनुभव किया कि उच्छ्वसल प्रणय, सामाजिक निर्माण तथा मर्यादा की स्थापना में अक्षम है, अतएव प्रस्तुत नाटक में उन्होंने वैवाहिक जीवन का समर्थन किया है। यह नाटक वैवाहिकता तथा तर्क वितर्क प्रधान है।

राष्ट्रीय भावना को लोकात् इस नाटक में व्यक्त है।

(३) प्रसाद के उत्कर्णकालीन नाटक

प्रसाद के उत्कर्णकालीन नाटक ‘ स्कन्दगुप्त ’ (१९२८) चन्द्रगुप्त (१९३१) तथा ‘ ध्रुवस्वामिनी ’ (१९३३) उनकी साहित्यिक कीर्ति के अमर स्तम्भ हैं। इन नाटकों के वस्तु विकास की परिस्थितियाँ में हमारे युग का समूचा परिवेश प्रतिध्वनित है-- एक पक्ष भारतीय राजनीति के तत्कालीन वान्दोलनों में और दूसरा पक्ष औद्योगिक धरातल या परिपार्श्व में देखा जा सकता है।

ध्रुवस्वामिनी (१९३३)

‘ ध्रुवस्वामिनी ’ प्रसाद की अंतिम ऐतिहासिक नाट्य रचना है। इसके मूल में समस्या का समाधान प्रमुख तत्व होते हुए भी यह समस्या नाटक की दृष्टि में परिगणित नहीं की जाती क्योंकि समस्या नाटक का बौद्धिक धरातल पर स्थित होना प्रथम मान्यता है तथा समस्या नाटक की समस्त विचारधारा किसी एक ही समस्या को प्रमुख लक्ष्य मानकर गतिशील होती है। ‘ ध्रुवस्वामिनी ’ का ऐतिहासिक कथानक नारी मोक्ष समस्या तथा योग्य शासक के उत्तराधिकार के प्रश्न को वहन किए हुए है। प्रसाद का यह नाटक अन्य नाटकों की अपेक्षा नवीन शिल्प के साथ नई समस्या एवं युगिन विचारधारा को प्रस्तुत करता है।

वस्तुतः इस नाटक का ध्येय राष्ट्रीय स्वरूप का प्रत्येकन करना नहीं प्रतीत होता। ‘ ध्रुवस्वामिनी ’ में राष्ट्रीय भावना को अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त अवसर नहीं मिला है, क्योंकि इसमें राज-नैतिक समस्या, राज सिंहासन के लिए योग्य उत्तराधिकारी के निर्णय की समस्या को महत्व प्रदान किया गया है तथा मोक्ष की सनातन समस्या का सार्वकालिक प्रश्न उठाया है। सामन्त कुमार द्वारा रामगुप्त का वध प्रजा के घोर वर्सतोष का परिचय देता है। प्रसाद राष्ट्र के लिए सर्वस्व त्याग करने के पक्ष में है। किन्तु राष्ट्र विसर्जन की अंतिम उपाय मानते हैं।

राष्ट्रीयता का पनीभूत स्फूर्ण

स्कन्दगुप्त (१६२८)

‘स्कन्दगुप्त’ नाटक के रचनाकाल में भारतीय स्वतन्त्रता बान्दीलन चरमोत्कर्ष पर था। याचना का भाव श्रान्ति में परिवर्तित हो गया था तथा राष्ट्रीयता की तीव्र भावना समस्त देश में परिब्याप्त हो चुकी थी।

स्कन्दगुप्त नाटक में राष्ट्र प्रेम तथा राष्ट्र स्वातन्त्र्य का उद्घोष सर्वत्र परिलक्षित होता है। यह तत्कालीन युगीन चेतना का सजीव चित्र चित्रित करने में पूर्ण सफल नाट्य कृति है। पराधीन देश के प्रत्येक स्वाभिमानी व्यक्ति के वैचारिक धरातल पर स्कन्दगुप्त सोचता है, “वार्य साम्राज्य का नाश इन्हीं वालों को देना था। हृदय काँप उठता है, देशाभिमान गर्जने लगता है। मेरा स्वत्व न हो, मुझे अधिकार की आवश्यकता नहीं। यह नीति और सदानारों का महान् वाक्य वृद्ध गुप्त साम्राज्य हरा भरा रहे और कोई भी इसका उपयुक्त रक्षक हो।” स्कन्दगुप्त का राष्ट्रीय वादश दूसरों के स्वत्व के अपहरण तथा परपीड़न से विमुक्त है। राष्ट्र की सुरक्षा तथा उत्थान के लिए युद्ध आवश्यक है किन्तु वह वाङ्मात्र नहीं होना चाहिए। जन्म-भूमि के उद्धार के स्वर ‘स्कन्दगुप्त’ में इतनी तीव्रता से अभिव्यक्त है,

निम्न गान्धी युगीन समूह राष्ट्रीय तान्दोलन के इतिहास तथा युगीन चेतना के सर्वांगीण रूप के दर्शन होते हैं।

(१) देश भक्ति

देश के प्रति निष्ठा का भाव राष्ट्रीयता का प्रमुख तत्व है। मालव राज बन्धुवर्मा देश के हितार्थ प्राणोत्सर्ग करने की तीव्र अभिलाषा व्यक्त करता है। “ मालव का राज कूटम्ब, एक एक बच्चा, कार्य जाति के कल्याण के लिए जीवन उत्सर्ग करने के लिए प्रस्तुत है। धातुसेन भारत की प्राकृति सुषमा का वर्णन करके उसकी ऐतिहासिक महत्ता का संकेत करता है, “ वसुन्धरा का हृदय भारत किस मूर्त की प्यारा नहीं है। तुम देखते नहीं विश्व का सबसे ऊँचा श्रृंग इसी सिरहाने और सबसे गम्भीर तथा विशाल समुद्र इसके चरणों के नीचे है। भारत के नैसर्गिक सौंदर्य का धातुसेन प्रशंसक है- “ एक से एक सुन्दर दृश्य प्रकृति ने अपने सुन्दर घर में चित्रित कर रखा है। भारत के कल्याण के लिए मेरा सर्वस्व समर्पित है। “ भारतीय राष्ट्र की सुरक्षा के लिए सौ स्कन्दगुप्त न्यायवादी हैं। प्रसाद द्वारा अभिव्यक्त उत्कट देश प्रेम पराधीनता के क्षणों में नवीन उत्साह का संवर्द्धन करने में पूर्ण सहायक सिद्ध हुआ। उन्होंने भारतीय अतीत के सांस्कृतिक गौरव का स्मरण दिला कर भारतीय संस्कृति की अपने नाट्य साहित्य में प्राण प्रतिष्ठा की। भारत अनादि काल से ज्ञान- विज्ञान का ज्ञाता रहा है। “ भारत

१- स्कन्दगुप्त पृ० ७५

२- “ पृ० ११६

३- “ पृ० ११६

४- २० वार० देसाई- सोशल बैंक ग्राउण्ड बाफ इंडियन नेशनलिज्म पृ० १२४

समग्र विश्व का है और संपूर्ण वसुन्धरा उसके प्रेम पाश में बाबद्ध है।
 अनादि काल से ज्ञान की मानवता की ज्योति यह विकीर्ण कर रहा है।^१ " गरुड़ ध्वज का मान रखने के लिए वात्स्य विसर्जन भी वीरों की स्वीकार्य है। बाध्य पर्यटक भी भारत को स्वर्गीय सुखमा के समकक्ष अन्य देशों को तुच्छ समझते हैं। वायविक के गौरव के लिए- गौ, ब्राह्मण और देवता की रक्षा का जो स्वर प्रसाद ने उठाया है वह राष्ट्रीय भावना से जीत प्रोत है, " उठो स्कन्द ? वासुरी वृणियों का नाश करो, सोने वालों को जगाओ और रौने वालों को हँसाओ । वायविक तुम्हारे साथ होगा और उस वाय पताका के नीचे समग्र विश्व होगा ।^२ " राष्ट्रीदार के लिए बन्धु वर्मा और गोविन्दगुप्त सदृश महापुरुषों ने जो महान् त्याग किए उनका इतिहास तो साक्षी मान है, प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक नाटकों के माध्यम से उस महान् त्याग की अमरत्व प्रदान किया । स्कन्दगुप्त को गुप्त साम्राज्य के नष्ट होने की इतनी चिन्ता नहीं, जितनी वाय राष्ट्र के ध्वस्त होने की । वह साम्राज्य का एक सैनिक मान होने में गौरव का अनुभव करता है।

(२) स्वर्णिम अतीत का चित्रण

सांस्कृतिक पुनर्जागरण के युग में अथवा राष्ट्रीय संकटकाल में गौरवपूर्ण अतीत के प्रति ध्यानाकर्षण एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। प्रसाद ने अतीत के उज्ज्वल ऐतिहासिक पक्ष को निरावरण करके

१- स्कन्दगुप्त - पृ० १२७

२- ,, पृ० १४१

३- ,, पृ० ३

वर्तमान राष्ट्रीय जीवन के वैश्वम्य से उद्भूत चेतना को अधिक संवेदनात्मक बनाने का यत्न किया है। प्रसाद ने अनुभव किया कि “हमारा वर्तमान ही नहीं, भूत, इतिहास भी विदेशी प्रभाव की छाया में मलिन हो गया है, अतः फिर से उसका सच्चा स्वरूप प्रदर्शित करने के लिए उन्होंने भारतीय ग्रन्थों के ही आधार पर ऐतिहासिक वर्णन किए।

स्वप्नों के देश भव्य भारत की कल्पना प्रसाद की बफो है। प्रसाद ने वार्य व्युत्थान के स्मरणीय युग को बफो नाटकों में चित्रित किया है। वीरों की भारत विजय का एक मात्र कारण भारतीय वतुल वैभव का बफरण था, यह एक ऐतिहासिक सत्य है। धन सम्पदा के बतिरिक्त वार्य जाति के अपुत्र्य रत्नों का भी प्राचीन भारत में बभाव नहीं था, जिनका निस्वार्थ त्याग बसीम था। “एक वार्य जाति के रत्नों की कौन सी प्रशंसा करने जिनका स्वार्थ त्याग बधीच के दान से कम नहीं।”

स्कन्दगुप्त में बतीत के प्रति सम्मोहन का भाव निहित है। प्रसाद ने वर्तमान के प्रति बडोश की बतीत के गरिमा गान की बौर उन्मुक्त कर दिया।

(३) नैतिक उत्कर्ष

स्कन्दगुप्त नाटक में सेना समूह के परिभ्रमण के

१- डा० नगेन्द्र - आधुनिक हिन्दी नाटक पृ० ८

२- स्कन्दगुप्त - पृ० २१

३- ,, २१

४- ,, ८१

५- ,, १६२-६३

समय एक गीत में भारतीय नैतिक उत्कर्ष का गान किया गया है।^१

(४) भौतिक उत्कर्ष

प्राचीन भारत की विराट् समृद्धि तथा भारतीय शौर्य विदेशियों के लिए सदैव वात्सल्य का विषय रहा है। 'स्कन्दगुप्त' के नाटक में बन्धु वर्मा क्षत्रियों के कर्तव्य निर्धारित करता है, "वार्ता परायण होना, विपदा का हँसते हुए वार्त्तिन करना, विभीषिकाओं की मुस्कराकर व्यवहारा करना, और विपत्तियों के लिए, अपने धर्म के लिए, देश के लिए प्राण देना।" रणक्षेत्र में गाया गया गीत गौरवपूर्ण भारतीय वीरता का दर्शन कराता है। प्रसाद ने प्राचीन वैभव का चित्रण किया है जो पतन का कारण था- "जाग्रत राष्ट्र में ही विलास और कलाओं का वादर होता है। और एक कान से तलवारों की और दूसरे से तूफान की फनकार सुनते हैं। प्रसाद ने यथाशक्ति भारतीय पराभव के प्रसंगों का परित्याग किया है। उपरोक्त उद्धरण भारतीय ऐश्वर्य की विपुलता का प्रमाण देते हैं। भारत भौतिक दृष्टि से इतना अधिक सम्पन्न था कि 'स्वर्ण युग' के नाम से अभिहित किया जाता था, तथा यही सम्पन्नता विदेशी वाक्त्रमकों का प्रमुख आकर्षण बिन्दु थी।

(५) वर्तमान दुर्दशा का चित्रण

प्रसाद के नाटकों में अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रियता

१- स्कन्दगुप्त पृ० १६२-६३

२- ,, ७९

३- ,, १००

के इस अभाववात्मक पक्ष का चित्रण मिलता है।

राजनैतिक दासता

भारतीयों के मस्तिष्क पश्चात्य संस्कृति के प्रसार से हीन भावना से ग्रस्त थे। प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक नाटकों के माध्यम से जन मानस में विरुद्ध भारतीय संस्कारों को प्रविष्ट करने का सराहनीय प्रयास किया है। हिन्दी साहित्य में प्रसाद का युग (१९१५ से १९३५ ई०) राष्ट्रीय आन्दोलनों का काल है, जिसमें १९२१ का सविनय अवज्ञा आन्दोलन १९२९ में असहयोग आन्दोलन के अतिरिक्त १९१६ में पंजाब ट्रेड्डी, साक्षन कमीशन, गवर्नमेंट आफ इंडिया स्वेट, प्रेस स्वेट आदि दमनकारी घटनाएँ जन आन्दोलन को उपरोक्त मोर्चापट्टा प्रदान कर रही थी तथा क्रान्तिकारी वर्ग भी पूर्ण सक्रिय था। प्रसाद ने सांकेतिक रूप में विदेशी शासन की पक्षपातपूर्ण कुटिल तथा दमनकारी नीति का चित्रण किया है। मातृगुप्त दूणों के अत्याचारों से दुःखित होकर कहता है, “ निरीह प्रजा का नाश नहीं देता जाता। बया झन्दी उत्पत्ति का यही उद्देश्य था। बया इनका जीवन केवल बीटियों के समान किसी की प्रतिहिंसा पूर्ण करने के लिए है। ” प्रसाद ने देश की संज्ञास्त अवस्था में प्रत्येक भारतीय नागरिक को स्वतन्त्रता संग्राम में कर्मठ सेनानी बनने का आदेश दिया है, “ अस्त प्रजा की रक्षा के लिए, सतीत्व के सम्मान के लिए, देवता, ब्राह्मण और गौ की पर्यादा में विश्वास के लिए, आर्तक से प्रकृति को आश्वासन देने के लिए आफ़ी

के इस अभाववात्मक पक्ष का चित्रण मिलता है।

राजनैतिक दासता

भारतीयों के मस्तिष्क पाश्चात्य संस्कृति के प्रसार से हीन भावना से ग्रस्त थे। प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक नाटकों के माध्यम से जन मानस में विरुद्ध भारतीय संस्कारों को प्रविष्ट करने का सराहनीय प्रयास किया है। हिन्दी साहित्य में प्रसाद का युग (१९१५ से १९३५ ई०) राष्ट्रीय वान्दोलनों का काल है, जिसमें १९२१ का सविनय अवज्ञा वान्दोलन १९२१ में असहयोग वान्दोलन के अतिरिक्त १९१९ में पंजाब ट्रिजेडी, साक्षन कमीशन, गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट, प्रेस एक्ट आदि दापीकारी घटनाएँ जन वान्दोलन को उपरीयर पोषणता प्रदान कर रही थी तथा क्रान्तिकारी वर्ग भी पूर्ण सक्रिय था। प्रसाद ने सांकेतिक रूप में विदेशी शासन की पदापातपूर्ण कुटिल तथा दमनकारी नीति का चित्रण किया है। मातृशुप्त दूणों के अत्याचारों से दुस्ति होकर कहता है, " निरीह प्रजा का नाश नहीं होता जाता। बया इनकी उत्पत्ति का यही उद्देश्य था। बया इनका जीवन केवल चीटियों के समान किसी की प्रतिहिंसा पूर्ण करने के लिए है।" प्रसाद ने देश की संश्लस्त अवस्था में प्रत्येक भारतीय नागरिक को स्वतन्त्रता संग्राम में कर्मठ सेनानी बनने का आदेश दिया है, " अस्त प्रजा की रक्षा के लिए, सतीत्व के सम्पान के लिए, देवता, ब्राह्मण और गौ की पर्यादा में विश्वास के लिए, आर्तक से प्रकृति को आश्वासन देने के लिए आफ्नी

अपने अधिकारों का उपयोग करना है।^१

-- प्रसाद का समय भारत में आन्तरिक विद्रोह का समय था। अन्तर्विद्रोह के शमन के लिए उन्होंने संगठन शक्ति को महत्व दिया है। चतुर्दिक विप्लवों का साम्राज्य था। निरीह प्रजा अत्यधिक कष्ट में थी। पंजाब की अमानुषिक यातना भारतीयों को अस्त किर हूर थी। प्रसाद ने तत्कालीन राजनैतिक दासत्व के सजीव चित्र वर्णित दिए हैं :

१- चारों ओर विप्लवों का साम्राज्य है,
निरीह भारतीयों को घोर दुर्दशा है।^२

२- यदि राज शक्ति के केन्द्र में ही अन्याय होगा तो समग्र राष्ट्र अन्यायों का डीढ़ा स्थल हो जाएगा।^३

३- हृदय में अशांति, राज्य में अशांति,
परिवार में अशांति।^४

४- यह समय अन्तर्विद्रोह का नहीं है। देखते नहीं ही कि साम्राज्य बिना कर्णधार का पीत होकर ढगमगा रहा है।^५

५- वायु गुप्त कृच्छ्रों से गुप्त साम्राज्य शिथिल

१- स्कन्दगुप्त - पृ० ४

२- ,, ३८

३- ,, ५१

४- ,, ६३

५- ,, १२६

है, कोई चाण्य राजा नहीं जो ब्राह्मण के धर्म की रक्षा कर सके^१।
 प्रसाद वार्य साम्राज्य की हत्या का भीषण दृश्य देखकर सिर उठे थे,
 “ देश के बच्चे भूखे हैं, नंगे हैं, असहाय हैं। ”

धार्मिक स्थिति

“ स्कन्दगुप्त ” नाटक में स्वधर्म की उन्नति तथा रक्षा के लिए बौद्ध भ्रमण विदेशी वाङ्मान्तावर्गों की सहयोगद देते हैं। उस समय तक वहींसक बौद्ध धर्म तार्किक रूप धारण कर चुक चुका तथा पशु बलि बन्द करने वाले बौद्ध धर्म के साधक नर बलि की श्रेष्ठ समझने लगे थे। तत्कालीन ब्राह्मणों के पतन का प्रसाद ने उत्तेजित किया है, “ लोभ ने तुम्हारे धर्म का व्यवसाय चल दिया। दक्षिणावर्गों की योग्यता से स्वर्ग पुत्र, धन, यश, विजय और मोक्षा तुम बेचने लगे, जिस धर्म के वाचरण के लिए पुष्कल स्वर्ग चाहिए, वह धर्म जन साधारण की संपत्ति नहीं। ”

यह स्पष्ट है कि बौद्ध धर्म में विजेतावर्गों के अस्व-शस्त्र का कोई प्रत्युत्तर न था, अतः राष्ट्र नेतावर्गों की सशस्त्र क्रान्ति का उद्घोष करना अनिवार्य हो गया। आधुनिक युग में १९ वीं शती के उत्तरार्द्ध में जिस धार्मिक पुनर्जागरण का सूत्रपात राममोहन राय, तथा स्वामी दयानन्द प्रभुति ने किया, उसने हिन्दू धर्म में वैचारिक क्रान्ति की

१- स्कन्दगुप्त पृ० १३०

२- ,, पृ० १५८

३- ,, पृ० १३२

जाग्रत किया। प्रसाद के नाटकों में फलबल पर आत्म बल की विजय का संदेश ध्वनित होता है।

आर्थिक फलन

प्रसाद ने आर्थिक विभीषिका का चित्रण किया है। धातुसेन के कथन से विघटित अर्थ व्यवस्था का यथेष्ट परिचय प्राप्त होता है, “ बयों की ब्रासण टुकड़ों के लिए अन्य जीवों की उप-जीविका होन रहे हैं। बयों एक वर्ग के लोग दूसरों की अर्थकरी वृत्तियाँ ग्रहण करने लगे हैं।”

आर्थिक व्यवस्था विभ्रंशित हो जाने पर राष्ट्र विपन्न और परमुत्तापित हो जाता है जो अधोगति की अंतिम पराकाष्ठा है। आर्थिक विपन्नता का दयनीय चित्र प्रसाद ने प्रस्तुत किया है- “ देश के बच्चे भूखे हैं, नंगे हैं, असहाय हैं।”

सांस्कृतिक चेतना

प्रसाद ने देश की तात्कालिक सांस्कृतिक दुर्दशा का मार्मिक चित्र खींचा है, “ यवनों से उधार ली हुई सभ्यता नाम की विलासिता के पीछे जाय जाति उसी तरह फड़ी है जैसे कुलवधू की क्रीड़ा

१- स्कन्दगुप्त पृ० १२२

२- ,, पृ० १५८

कर कोई नागरिक वैश्या के चरणों में ।^१

दूसरी ओर साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित सांस्कृतिक वाक्यों के स्वर गुंथित हैं, “ वस्त्र पर स्वत्व है, भूतों का और धन पर स्वत्व है, देशवासियों का । प्रकृति ने हमारे लिए हम भूतों के लिए रस छोड़ा है। वह पाती है, उसे लौटाने में अपनी कुटिलता^२ । ”

राष्ट्र की सुरक्षा की भावना

स्कन्दगुप्त का समस्त वायोजन , किया प्रणाली, विपुल संघर्ष उसे एक कर्मठ किन्तु निस्पृह राष्ट्रीय सैनिक सिद्ध करते हैं। वह मालव में मूर्धाभिषिक्त होने पर राष्ट्रीय सुरक्षात्मक दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करता है -

“ इस गुरुतर उत्तरदायित्व का सत्य से पालन कर सधुं और आवं राष्ट्र को रक्षा में सर्वस्व अर्पण कर सधुं, वाप लोग इसके लिए भगवान् से प्रार्थना कीजिए और आशीर्वाद दीजिए कि स्कन्दगुप्त अपने कर्तव्य से, स्वदेश सेवा से कभी विचलित न हो । ”

स्कन्दगुप्त में वार्यावर्त के गौरव के लिए गौ, ब्राह्मण , की रक्षा की भावना व्यक्त की गई है, “ शरणागत

१-स्कन्दगुप्त पृ० १००

२- , पृ० १४८

३- , पृ० ८२

४- , पृ० १४१ , ४

रक्षा भी दानवों का धर्म है---- कौला स्कन्दगुप्त मालव की रक्षा के लिए सन्नद्ध है।^१ राष्ट्र की सुरक्षा प्रत्येक दानवों का कर्तव्य है, “स्त्रियों की, ब्राह्मणों की, पीड़ितों और वनाश्रमियों की रक्षा में, प्राण विसर्जन करना दानवों का धर्म है।”^२ पर्णदत्त साम्राज्य के विरोधी रत्नों को स्फुरित कर राष्ट्र की सुरक्षा करता है, “वार्थ पर्णदत्त से साम्राज्य के विरोधी रत्न स्फुर कर रहे हैं, वे सब निरपलम्ब हैं। किसी के पास टूटी तलवार ही बची है तो किसी के जीर्ण वस्त्र सज्ज हैं।”^३

वात्पौत्सर्ग की भावना

प्रसाद ने गरुड़ ध्वज की झाला में पवित्र दानव धर्म का पालन करते हुए उसके सम्मान में प्राण विसर्जित करने वाली ऐतिहासिक विभूतियों की अवतारणा की है। पर्णदत्त की देश की मुक्ति के लिए प्राणोत्सर्ग करने वाले वीर अभीष्ट हैं, “मुझे जय नहीं चाहिए, मौल चाहिए। जो दे सकता है अपने प्राण, जो जन्मभूमि के लिए उत्सर्ग कर सकता है जीवन, वैसे वीर चाहिए, कोई देगा मौल में।”^४

स्कन्दगुप्त प्राणों का मोह त्याग कर स्त्रियों की, ब्राह्मणों की, पीड़ितों और वनाश्रमियों की रक्षा में प्राणों का मोह त्याग करना वीरता का रहस्य समझता है।

१- स्कन्दगुप्त पृ० ८

२- ,, ४७

३- ,, १५२

४- ,, १५६

५- ,, ५०

‘स्कन्दगुप्त’ नाटक में वात्स्य बलिदान की भावनात्मक उक्तियाँ यन् तन् बिसरी हुई हैं- जो राष्ट्र के प्रति असिम प्रेम को व्यञ्जित करती हैं :

१- मात्स्य का राज कुटुम्ब, एक एक वच्चा,
वार्य जाति के कल्याण के लिए जीवन उत्सर्ग करने के लिए प्रस्तुत है।

२- एक नहीं सौ स्कन्दगुप्त उस पर न्यौझावर है।^२

३- यह रौने का नहीं, वानन्द का समय है। कौन
वीर इसी तरह जन्मभूमि की रक्षा में प्राण देता है, यही मैं ऊपर से
देखने जाता हूँ।^३

४- गुरुहृदय का मान रहे, भले ही प्राण जाए।^४
एक नहीं, ऐसे सहस्रों स्कन्दगुप्त, ऐसे सहस्रों देव तुल्य उदार युवक इस जन्म
भूमि पर उत्सर्ग हो जाए।^५

५- इस समय देशकी वीरों की आवश्यकता है,
रणभूमि में प्राण देकर अपनी जन्मभूमि का उपकार करो।

प्रसाद त्याग और दामा , तप वीर विद्या का

१- स्कन्दगुप्त पृ० ८२

२- ,, पृ० ३४

३- ,, पृ० ११०

४- ,, पृ० ११४

५- ,, पृ० १३५

६- ,, पृ० १५७

वस्तित्व तैज और सम्मान के लिए मानते हैं। " संसार में जो सबसे महान् है, वह क्या है, त्याग । त्याग का ही दूसरा नाम महत्त्व है। "

प्रसाद के राष्ट्रीय नाटकों का प्रमुख संदेश राष्ट्र के लिए सर्वस्व त्यागने का संकल्प है।

राष्ट्रीय उद्बोधन के स्वर

विजया मातंगुप्त से भारतवासियों को जाग्रत करने के लिए उद्बोधन गीत गाने का अनुरोध करती है, " एक बार वह उद्बोधन गीत गा दो कि भारतीय अपनी नश्वरता पर विश्वास करके अमर भारत की सेवा के लिए एक सन्मद हो जाए--- सुना दो वह संगीत जिससे फटाड़ हिल कर रह जाए और समुद्र काँप कर रह जाए, तंगड़ाइयाँ लेकर मुजुमुन्द की मोह निद्रा से भारतवासी जाग पड़े । हम तुम गली गली , कौने कौने पर्यटन करेंगे , पैर पढ़ेंगे, लोगों को जगावेंगे ।

वालाञ्छनाल के अंतिम चरण में देश के प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में यह भावना बढ़ मूल हो चुकी थी कि स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। युवा वर्ग विशेष रूप से हिंसात्मक साधनों द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील था । उनके क्रांतिकारी संगठन सक्रिय हो उठे थे । सविनय निवेदन का स्थान वापस युक्त अोजस्विता ने ग्रहण कर लिया था । प्रसाद के नाटकों में भी यह परिवर्तन क्रमशः दृष्टिगोचर होता है।

१- स्कन्दगुप्त पृ० ५०

२- " " पृ० १२१

प्रजातान्त्रिक साम्यवादी विचारधारा का प्रभाव

प्रजातान्त्रिक साम्यवादी विचारधारा का प्रभाव परिलक्षित होता है^१ अन्न पर स्वत्व है, भूतों का धन पर स्वत्व है, देशवासियों का ।^२ समस्त प्रजा स्कन्दगुप्त की सम्मिलित रूप से राष्ट्रीय रक्षक निर्वाचित कर पण्डित की कार्य पताका की छाया में एकत्रित होती है।

निष्कर्ष रूप में प्रसाद ने^३ स्कन्दगुप्त नाटक में राष्ट्रीयता का उत्कृष्ट स्वरूप प्रस्तुत किया है।

१- स्कन्दगुप्त पृ० १४८

चन्द्रगुप्त (१६३१)

‘चन्द्रगुप्त’ ऐतिहासिक घटनाओं के व्यापक सन्दर्भ में राष्ट्रीय भावनाओं से वीत प्रीत नाट्य रचना है। प्रसाद ने इस नाटक के निर्माण द्वारा तत्कालीन बहिष्कार, जातीयता, प्रान्तीयता तथा वैयक्तिक भेद भावों का उन्मूलन कर व्यापक राष्ट्रीय चेतना का वातावरण किया है। ‘चन्द्रगुप्त’ प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना से सम्पन्न ऊर्जस्वित नाट्य कृति है जिसमें युगीन राष्ट्रीयता की ऐतिहासिक सन्दर्भ में चित्रित किया गया है।

देशभक्ति

“ उत्कट देश प्रेम के कारण ही प्रसाद ने स्वदेश के गौरवपूर्ण प्राचीन इतिहास का उद्घाटन अपना एक मान लक्ष्य बना लिया था । ” सिहरण बल्का से कहता है, “ जन्मभूमि के लिए ही जीवन है। ” बल्का देश के प्रत्येक वणु- परमाणु से वगाध ममत्व रखती है- “ मेरे देश हैं, मेरे फाड़ हैं, मेरी नदियाँ हैं और मेरे जंगल हैं। इस भूमि के एक एक परमाणु मेरे हैं और मेरे शरीर के एक एक द्रुद्र वेश उन्हीं परमाणुओं के बने हैं। ” भारतीय मिट्टी से निर्मित तथा पोषित शरीर एक एक वणु परमाणु का वाजीवन कृणी है। देश के प्रत्येक कण के प्रति यह वगाध निष्ठा अन्य दुर्लभ है। ” यह प्रसंग इतिहास के

१- ब्रजरत्नदास- हिन्दी नाटक साहित्य पृ० ३३६

२- चन्द्रगुप्त - पृ० ७९

३- “ ” पृ० ८९

अनुकूल ही व्यवहार नहीं, किन्तु इसमें बोलती हुई देश भक्ति की स्कान्त भावना दिव्य है। देश भक्ति का स्तना शुद्ध और पवित्र रूप मैं ने हिन्दी साहित्य में अन्य नहीं देखा^१ ।

विदेशी कन्या कार्नेलिया भारतीय सुशमा तथा पहना के प्रति पूर्ण निष्ठा के साथ अनुरक्त है। वह भारत के प्रति भक्ति भाव प्रकट करती है, "मुझे इस देश से जन्म भूमि के समान स्नेह होता जा रहा है। यहाँ के श्यामल कुँज, घने जंगल, सरिताओं की माला फूले हुए शैल श्रेणी, हरी भरी वन्याँ, गर्भों की चाँदनी, शीत काल की धूप और मोले कृष्णक तथा सरल कृष्ण बालिकाएँ, बाल्य काल की सुनी हुई कहानियों की जीवित प्रतिमाएँ हैं। यह स्वप्नों का देश, यह त्याग और ज्ञान का पालना, यह प्रेम की रंगभूमि भारत भूमि क्या मुलाई जा सकती है, अन्य देश मनुष्यों की जन्म भूमि है, यह भारत मानवता की जन्मभूमि है।"^२

भारत का अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य उबल पंक्तियों में द्रष्टव्य है। भारत का मानवतावादी दृष्टिकोण प्रसाद के नाटकों में अमिट स्थान बना गया है। विश्व विजयी बलदोन्द्र भारतीय पहना के सम्मुख नत शिर है, मैं भारत में हरबूतिस, स्वतिस की वात्साओं की भी देखा और देखा हिमास्थानी की। संभवतः पेटो और वरस्तू भी होंगे। मैं भारत का अभिनन्दन करता हूँ।^३

१- डा० नगेन्द्र- आधुनिक हिन्दी नाटक पृ० ६

२- चन्द्रगुप्त - पृ० ८६

३- .. पृ० १३९

४- .. पृ० १३५

स्वर्णिम काल का चित्रण

पराधीनता जन्य मोह निद्रा से ग्रस्त जनता को जाग्रत करने, उसे राष्ट्रीय मान वफ़्फ़ान का बोध कराने तथा विदेशी संस्कृति के दुष्प्रभाव से भारतीय संस्कृति के स्वरूप को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से प्रसाद ने अपने नाटकों में स्वर्णिम काल के गौरव का गान किया है। 'गुप्तकाल' सभी दृष्टियों से 'स्वर्ण युग' था। प्रसाद ने 'चन्द्रगुप्त' नाटक की भूमिका में चन्द्रगुप्त के शासन काल के अपार वैभव का विस्तृत वर्णन किया है। मालविका का सिन्धु देश समस्त विप्लवों से रहित है, वहाँ युद्ध विग्रह नहीं, न्यायालयों की आवश्यकता नहीं, प्रचुर स्वर्ण के रहते भी कोई उसका उपयोग नहीं।^१

वर्ष संकट से मुक्त, विप्लवों से रहित सिन्धु देश की कल्पना वास्तव में भारतीय स्वर्ण युग का चित्र साकार कर देती है। प्रसाद भारत में वर्ष संघर्ष से रहित एक शान्ति निकेतन की मानवैक्य की दृष्टि से स्थापना करने के लक्ष्य थे।

वाध्यात्मिक उत्कर्ष

प्रसाद के ऐतिहासिक राष्ट्रीय नाटकों में भारतीय वाध्यात्मिक गौरव सुरक्षित है। 'महाभारत काल और पुराणकाल' से लेकर ठेठ सम्राट् हर्षवर्धन तक के काल का विस्तृत वृत्त लेकर प्रसाद ने अपने नाटकों में अपने प्रगाढ़ इतिहास प्रेम, दीर्घकाल व्याप्ति, वसण्ड व

समन्वयात्मक ऐतिहासिक दृष्टि और गम्भीर इतिहासनुशीलन का बड़ा ही मध्य परिचय दिया है।^१ कृष्ण दाण्ड्यायन भीतिक वाकजंण से कोसों दूर हैं। वे सिकन्दर के दूत से कहते हैं, "भूमा का सुत और उसके महत्ता का जिसको वाभास मात्र ही जाता है उसको ये नश्वर चमकीले प्रदर्शन नहीं अभिभूत कर सकते।" प्रसाद ने ब्राह्मणत्व को सार्वभौम, शाश्वत बुद्धि वैभव माना है। उन्हें शास्त्रका प्रणीता, व्यवस्थापक तथा धर्म का नियामक स्वीकार किया है।^२ महान् वाक्यात्मवादी कृष्ण दाण्ड्यायन स्वयं को सदैव स्वतन्त्र घोषित करता है, "मेरी वावश्यकताएँ परमात्मा की विभूति प्रकृति पूरा करती है, उसके रहते दूसरे का शासन कैसा--- मेरी स्वतन्त्र वात्मा पर तुम्हारे देव पुत्र का भी अधिकार नहीं हो सकता।"^३

गांधी विचारधारा से प्रभावित प्रसाद धर्म विहीन राजनीति को पाशविक प्रवृत्ति से युक्त मानते हैं, जिनमें न्याय उपेक्षित रहता है। उन्होंने धर्म समन्वित राजनीति का अनुमोदन किया है जो भारतीय संस्कृति का प्रमुख तत्त्व है।

नैतिक उत्कर्ष

प्रसाद के नाटकों में वाक्यात्मक और वाधिमौक्तिक दोनों शक्तियों के सामंजस्य से मानव की गहनतम नैतिकता विकासोन्मुख बनती है। प्रसाद के एक सिद्ध हस्त कलाकार के समाज ज्ञानी नैतिकता के बल

१- रामेश्वर लाल सण्डेलवाल का निबन्ध- प्रसाद के नाटक- भारतीय

नाट्य साहित्य ग्रन्थ में संगृहीत पृ० ३०५

२- चन्द्रगुप्त पृ० ६५

३- ,, पृ० ६०, ७४, ८०

४- ,, पृ० ८५

से मानवत्व और देवत्व को स्थापित कर दिया है। यह प्रसाद के नाटकों की बहुत बड़ी विशेषता है।^१ भारतीय संस्कृति के नीति तत्वों के अभाव में सर्जित साहित्य कदापि राष्ट्रीय पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकता। और नहीं वह युग को उचित दिशा बोध देने में सक्षम हो सकता है। यह प्रसाद की बूट धारणा है। उनके समस्त ऐतिहासिक नाटकों का वाचान्त अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि नैतिकता उनके नाटकों में मेरुदण्ड के सदृश अवस्थित है। नैतिक वाचरण सम्पूर्ण राष्ट्रीय जीवन को कल्याण पथ पर अग्रसर करता है। प्रसाद के साहित्य सृजन का प्रमुख उद्देश्य देवत युग बोध का ही चिन्ना नहीं अपितु सँवृत मानवता के भीषण आतं नाद को दूर करने के लिए सुव्यवस्थित नैतिक नियमों का निर्माण करना है।^२ प्रसाद केवल युग प्रवर्तक साहित्यकार ही नहीं, अपितु इतिहास के असाधारण अन्वेषक, भारतीय संस्कृति के प्रबल पोषक कार्य कृषियोगों के उदात्त एवं समन्वयवादी धर्म के समर्थक तथा भारतीय परम्परा के मानवतावादी दार्शनिक थे।^३

प्रसाद ने नैतिकता में वास्तिकता का भी समावेश किया है क्योंकि "वास्तिकता रहित नैतिकता जीवन को पूर्ण नहीं बना सकती।"^४

महर्षि वाण्ड्यायन सिकन्दर से कहते हैं, "जय घोर तुम्हारे चरणों में। हत्या, रक्तपात, और अग्निकाण्ड के लिए उफ़ारण जुटाने में मुझे आनन्द नहीं। विजय तृष्णा का अन्त पराभव में

१- डा० दशरथ जीभा- हिन्दी नाटक उद्भव और विकास पृ० ४७

२- डा० हरीन्द्र - प्रसाद का नाट्य साहित्य : परम्परा एवं प्रयोग पृ० २४५

३- डा० दशरथ जीभा- हिन्दी नाटक उद्भव विकास पृ० २३७

होता है। राज व्यवस्था सुव्यवस्था से बड़े तो बड़ सकती है, केवल विजयों से नहीं, इसलिए अपनी प्रजा के कल्याण में लगे।

स्पष्ट है कि प्रसाद ने बौद्ध और ब्राह्मण दर्शन के गहन अध्ययन व मनन के उपरान्त वास्तविकता के व्यावहारिक पक्ष की श्रेष्ठता प्रदान की है जिसमें लोक हित, विश्व मानवता तथा विश्व मैत्री के भाव समाविष्ट हैं।

भौतिक उत्कर्ष

भारतवर्ष की उर्वरा भूमि, अपार धन सम्पदा, एवं अप्रतिम शौर्य तथा सांस्कृतिक गौरव ने विदेशी आक्रामकों को सतत प्रेरित किया है। 'चन्द्रगुप्त' में भारतीय शौर्य तथा वीरता से युद्ध क्षेत्र में अलौकिक प्रभावित होता है- "वाज मुझे जय पराजय का विचार नहीं है। मैं एक अलौकिक वीरता का स्वर्गीय दृश्य देता हूँ। होमर की पद्मी हुई जिस कविता की कल्पना से मेरा हृदय भरा है उसे यहाँ प्रत्यक्ष देता हूँ।"

अतीत कालीन भारत के भव्य रूप का उद्घाटन पर्याप्त सीमा तक तत्कालीन राष्ट्रीय हीन भावना के उन्मूलन में सहायक सिद्ध हुआ।

१- चन्द्रगुप्त पृ० ८७

२- ,, पृ० ११५

वर्तमान राजनीतिक, वार्षिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक

दुर्दशा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रत्येकन

विदेशी शासन के प्रभुत्व का प्रसाद ने सजीव चित्रण किया है। भारतीय राजनीतिक स्थिति अत्यधिक दयनीय तथा फतनोन्मुख थी- " दस्यु और स्तेच्छ साम्राज्य बना रहे हैं और वार्य जाति फतन के कगार पर खड़ी एक धक्के की राह देस रही है। "

भारतीय प्रसवकों के प्रतीक देश द्रोही वाम्भीक की प्रसाद ने घृणा की दृष्टि से देता है। वाम्भीक ने यवन उत्कीच ग्रहण करके राष्ट्र घातक नीति अपनाई है। ऐसे व्यक्ति देश में कर्त्तक स्वरूप हैं। सिंहरक्षा देश द्रोह का रहस्योद्घाटन करता है, " यवन वाङ्मणकारियों के पुष्कल स्वर्ण सेपुलकित होकर वार्यावर्त की सुख रज्जी की शान्ति निद्रा में उपराप्य की वर्गला धीरे से सोल देने का रहस्य है। "

वाङ्मण के समय भारतीय सुशुप्तावस्था का सहज चित्र वर्णित किया है-

" हम लोग इतने बड़े वाङ्मण के समारंभ में लगे हैं और यह देश जैसी सोया हुआ है, लड़ना जैसी इसके जीवन का उदंग जनक वंश नहीं। अपने ध्यान में दार्शनिक की तरह निमग्न है। सुनते हैं, पौरव ने केवल फेलम के पास कुछ सेना प्रतिरोध के लिए रत छोड़ी है। हम लोग जब पहुँच जायें, तब वे लड़ लेंगे। "

१- चन्द्रगुप्त पृ० ४८

२- ,, पृ० ४६

३- ,, पृ० ६२

विदेशी वाङ्मय मेद नीति के आधार पर भारत विजय में कृत कार्य होते जाए हैं। तत्कालीन युग में अंग्रेज भारतीय हिन्दू मुस्लिमों में 'फूट करो और शासन करो' की मेद नीति का अवलम्बन ले रहे थे। प्रसाद ने इस तथ्य की ओर संकेत किया है, "मगध का वर्तमान शासक एक नीच जन्मा जारज सैतान है। उसकी प्रजा वर्सतुष्ट है, और तुम उस राज्य को हस्तगत करने का प्रयत्न कर रहे हो।"

प्रसाद ने देश के वार्षिक संकट का भी यन्त्र उल्लेख किया है, तथापि सांस्कृतिक तथा राजनीतिक दुर्दशा की ओर उनका विशेष ध्यान केन्द्रित था। उन्होंने अपने नाटकों में राष्ट्रीय तत्त्वों की उद्भावना करके जन साधारण को अपने अधिकारों तथा वार्षिक हितों के प्रति सचेत करने का यथासंभव प्रयास किया तथा स्वदेशी वस्तुओं की ग्रहण करने की प्रेरणा दी।

प्रसाद ने विदेशी वाङ्मान्ताओं के मुक्त से भारत की स्तुति करा कर उदात्त गरिमा प्रदान की है। ग्रीस कुमारी कार्नेलिया भारतीय संस्कृति तथा शिक्षा की प्रशंसक हैं। वह यहाँ के विस्तृत भूतण्ड, प्राकृतिक सौंदर्य, देश के सुखमय जीवन, यहाँ के लाल, मृग, धन, वन, पर्वत, ऊँछा, सन्ध्या की मनोहरता पर मुग्ध है। वह महर्षि दाण्ड्यायन के वाचन पर भारतीय दर्शन की शिक्षा ग्रहण करती है। भारतीय संगीत में उसकी विशेष वमिरुचि है। भारतीय धर्म ग्रन्थ रामायण की ओर उसका झुकाव है। कार्नेलिया ने भारत के ज्ञान-विज्ञान का गहन अध्ययन किया है। उसने

अनुभव किया कि भारत तथा यूनानी संघर्ष में अस्त्रों का टकराव ही नहीं बल्कि दो बुद्धियाँ (चाणक्य तथा अरस्तू) में भी प्रतिस्पर्धा का भाव निहित है। वह कहती है " अन्य देश मनुष्यों की जन्मभूमि है, यह भारत मानवता की जन्मभूमि है।"^१

सिकन्दर भी भारतीय दार्शनिकों की मविष्यवाणी से प्रभावित है। दण्ड्यायन की मविष्य वाणी उसे पुनः भारत अभियान पर विचार करने के लिए विवश कर देती है। अन्त में वह भारत का अभिनन्दन कर मैत्री भाव व्यक्त करता है -

" मैं भारत में हरब्यूलिस, एन्जिलिसकी वात्माओं की भी देखा और देखा डिम्बास्थनीज की । संभवतः प्लेटो और अरस्तू भी होंगे । मैं भारत का अभिनन्दन करता हूँ।^२ मैं तलवार नहीं हुर भारत में बाया , हृदय देकर जाता हूँ।"^३

समसामयिक भारतीय तथा पार्श्वगत संघर्ष राजनीतिक ही नहीं, बौद्धिक भी था, " यह युद्ध ग्रीक और भारतीयों के अस्त्र का ही नहीं, ज्ञान की बुद्धियाँ भी लड़ रही हैं। यह अरस्तू और चाणक्य की जीत है।"^४

प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों का वातावरण

१- चन्द्रगुप्त पृ० १३२

२- ,, पृ० १३१

३- ,, पृ० १३५

४- ,, पृ० १३५

५- ,, पृ० १३२

पूर्ण सांस्कृतिक है जिसमें वाधुनिक भारतीय राष्ट्रीय समस्याओं का सम्मिश्रण है। वार्य संस्कृति, जनार्य संस्कृति, शक-सूण, संस्कृति, वाग्नेय, संस्कृति तथा नाग संस्कृति के संघर्षों और समन्वय का वर्तमान के सन्दर्भ में चित्रण प्रसाद के नाटकों की प्रमुख विशेषता है।

भारतीय संस्कृति के प्राणतत्त्व वहिसा का प्रसाद ने सर्वत्र अनुमोदन किया है, उनकी सांस्कृतिक चेतना गौतम तथा गांधी के आध्यात्मिक, नैतिक दर्शन का समन्वित रूप है। प्राचीन भारत वेद, उपनिषद्, अर्थशास्त्र, राजनीति, धर्म, गणित, वैष्णव, ज्योतिष, संगीत, अस्त्र विद्या का वादि गुरु था, वाधुनिक युग में पाश्चात्य संस्कृति की प्रगतिशीलता से प्रभावित होकर विकासशील हुआ। प्रसाद ने राज-नैतिक दासता की ही अन्य सभी दुर्दशाओं का केन्द्रीभूत कारण माना है।

तत्कालीन राष्ट्रों के उलट फेर में धर्म के दुराग्रह ने भी पर्याप्त रूप से सक्रिय भाग लिया था। प्रसाद के नाटकों में ब्राह्मण बौद्ध धर्म का संघर्ष विद्यमान है, जिसने तत्कालीन राष्ट्रीयता के विकास में घोर क्षति पहुँचाई।

चन्द्रगुप्त का युग ब्राह्मण धर्म के प्रचार तथा विकास का काल है, जब बौद्ध तथा ब्राह्मण धर्म का संघर्ष पूर्ण तीव्रता पर था। नन्द कभी बौद्धों का पदापाती, कभी ब्राह्मणों का अनुयायी

१- ए० वार० देसाई० पृ० १२४ सोशल कैंग्राउण्ड वाफ इंडियन नेशनैलिज्म
२० वात्सी पजेस्ट दि साईस वाफ मेडिसिन । ”

२- द टाइम्स डेज रराव्ड वेन दि साईस, कैडिल्ड इन दि ईस्ट एण्ड
ब्रीट द मेक्योरिटी इन दि वेस्ट, वार नाउ बाइर फाइनल एफर्ट
द वीवर स्प्रैड दि वर्ल्ड । सोशल कैंग्राउण्डवाफ इंडियन नेशनैलिज्म

बनकर दोनों में भेदनीति चलाकर धर्म की वाढ़ में प्रजा को कष्टमय जीवन व्यतीत करने के लिए विवश करता है। शासक तथा शासित दोनों वर्ग परस्पर वर्तुष्ट थे। चाणक्य ने धार्मिक भेद भाव को राष्ट्रीय पतन का कारण बताते हुए कहा- “यत्र राजमणकारी बौद्ध और ब्राह्मण का भेद नहीं रहे^१।” निरसिंह प्रसाद का रचित भारतीय मुस्लिम धार्मिक साम्प्रदायिक संघर्ष की ओर है। प्रसाद ने ब्राह्मण की शास्त्रप्रणीता तथा व्यवस्थापक की संज्ञा से विभूषित कर उसे एक शाश्वत बुद्धि वैभव का अधिकारी माना है^२।

प्रसाद बौद्धों के विहार जीवन से मली मूर्ति परिचित हो चुके थे, तथा उस तथ्य से भी अवगतही गए थे कि संयमी और कठोर ब्राह्मणों में धर्म व्यवस्था के प्रति जो वास्था है वह अत्यान्तार के निवारण और लोक-कल्याण के निमित्त ही है। चाणक्य का ब्राह्मणत्व राष्ट्र की शुचिचिन्ता में निहित है, क्योंकि एक जोष की हत्या से डरने वाले बौद्ध श्रमण वायावर्क को रक्षा में असमर्थ थे। प्रसाद युग में ईसाई धर्म के आगमन के परिणामस्वरूप हिन्दू धर्म स्वयं से सिमट कर और अधिक संकुचित हो गया था। “उसी प्रभाव की एक प्रतिक्रिया थी १६ वीं शती के उत्तरार्द्ध में आविर्भूत भारत का पहला पुनर्जागरण जिसने बीसवीं शती के आरंभ में प्रथम आधुनिक राष्ट्रीय जागृति को जन्म दिया।”^३ ये धार्मिक सामाजिक सुधार बान्दील निश्चित रूप से भारतीय राष्ट्रीयता बान्दील में पूर्ण सहयोगी थे। यह उल्लेखनीय है कि भारत के व्यापक

१- चन्द्रगुप्त पृ० ६७

२- “, , पृ० ६७- ८०

३- डा० कर्णसिंह - भारतीय राष्ट्रीयता का अग्रदूत पृ० ५

४- पी० सीतारामैया - कश्मिर का इतिहास- पृ० १४

“बाल दीज मूवमेन्ट्स वेयर रियली सो मैनी ग्रैस इन दि स्ट्रेक्स
वाफ इंडियन नेशनलिज्म।”

जब बान्दीलन की पृष्ठभूमि सदा वाध्यात्मिक रही है।^१

स्वराज्य की माँग एक राष्ट्र की कल्पना

तत्कालीन युग की माँग भारतवर्ष के लिए सब प्रकार के उचित तथा शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा स्वराज्य प्राप्ति की भावना थी। १९२१-२२ के असहयोग बान्दीलन ने देश में एक अभूतपूर्व उत्साह का सन्निवेश किया। विदेशी उपकरणों का परित्याग, स्वदेशी का प्रचार प्रसार तथा राजनैतिक गतिविधियों में अंग्रेजी साम्राज्यवाद के प्रति असहयोग इस बान्दीलन का प्रमुख कार्यक्रम था। प्रसाद ने अपने नाटकों में स्वतन्त्र भारत की परिकल्पना द्वारा स्वराज्य प्राप्ति की। वह मध्य अभिलाषा की विवृत किया है। उन्होंने एक स्वतन्त्र तथा संगठित राष्ट्र की कल्पना की है। उनके नाटकों में प्रयुक्त 'एक वायार्वि' 'एक देश तथा एक राष्ट्र' की धारणा व्यक्त हुई है। 'चन्द्रगुप्त' नाटक में उन्होंने संपूर्ण वायार्वि के मूल भाग की अपना देश सम्भरने की शिक्षा दी है- 'मेरा देश मालव ही नहीं गंधार भी है। यही क्या समग्र वायार्वि है।'^२

राष्ट्रीय स्वता के विध्वंसात्मक तत्वों साम्प्रदायिकता, प्रान्तीयता, धार्मिक कट्टरता, जातीयता पर तीव्र प्रहार प्रसाद के नवीन दृष्टिकोण का परिचायक है, 'तुम मालव हो, और यह मागध, यही तुम्हारे मान का अवसान है, किन्तु वात्म सम्मान इतने से ही संतुष्ट न होगा। मालव और मागध को भूल कर जब तुम वायार्वि का

१- डा० कर्णसिंह - भारतीय राष्ट्रीयता का अग्रदूत पृ० ११

२- चन्द्रगुप्त पृ० ५२

नाम लोगे तभी वह मिलेगा^१। “ नाटक के प्रारंभ में ही सिंहराजा समग्र वायवर्ग की सुरक्षा के लिए चिन्तित प्रतीत होता है, “ मालवों की वर्णशास्त्र की उतनी आवश्यकता नहीं जितनी लक्ष्म शास्त्र की। वायवर्ग का भविष्य लिखने के लिए कुछ और प्रतारणा की लेखनी और मसि प्रस्तुत हो रही है। उज्जयिनी के सण्ड राज्य देश से जर्जर है। शीघ्र ही भगवान् विस्फोट होगा। ”

“ यदि किसी प्रकार सिन्धु की प्रसर धारा की यवन सेना पार न कर सकती। ”

वत्स देशद्रोही वाग्भीक के सन्मुख वायवर्ग का व्यापक वादर्थ प्रस्तुत करती है, “ भाई तदाशिला मेरी नहीं, तुम्हारी भी नहीं। तदाशिला वायवर्ग का एक एक भू भाग है, वह वायवर्ग की होकर ही रहे, इसके लिए मर मिटो। ”

चन्द्रगुप्त के सा प्राज्य की दक्षिणापय के स्वर्ग गिरि से पञ्चद तक, सौराष्ट्र से बंग तक स्थापित कर, उज्जयिनी के सभी प्रमुख गणतन्त्रों मालव, क्षत्रक और यौधेय वादि को उसके तंग रूप में उल्लिख किया है।

वात्पौर्ण की भावना

प्रसाद के नाटकों में भारतीय राष्ट्र के सम्मान

१- चन्द्रगुप्त - पृ० ५१

२- “ “ ४७

३- “ “ ५३

४- “ “ १७६

५- “ “ १७६

व सृष्टा के लिए आत्मोत्सर्ग की भावना अभिव्यक्त हुई है। सिंहरण जीवन की जन्मभूमि के निमित्त मानता है- "जन्म भूमि के लिए ही यह जीवन है।" प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए जी लड़कर मर नहीं गया वह कायर नहीं तो और क्या है। चन्द्रगुप्त वात्स्य सम्मान की रक्षा के लिए मर मिटने की दिव्य जीवन समझता है।

राष्ट्रीय उद्बोधन के स्वर

प्रसाद के नाटकों में उद्बोधन गीतों का बाहुल्य है। नव युग में जागृत चेतना भरने के लिए जलका का यह उद्बोधन गीत बहुत उपयुक्त है :

हिमाद्रि तूंग शृंग से प्रसूत शुद्ध भारती ।

स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता फुकारती ॥ ४

जलका राष्ट्र प्रेम की सजीव प्रतिमा है। वह कार्य फलाका हाथ में लेकर देश के सुशुप्त वीरों की जागरण का संदेश देती है। प्रसाद के समय में भारतीय नारी जाग्रत होकर स्वाधीनता बान्दील में सक्रिय भाग ले रही थी। विद्रोहिणी जलका को राष्ट्रीय जागरण अभिप्रेत है। वह कहती है, " मैं मुक्त होने पर यही करूँगी। कृतघ्नों के रक्त से आर्यावर्त की भूमि सिंचिगी। दानवी बन कर जननी जन्मभूमि अपनी संतान की साएगी। आर्यावर्त के सब बच्चे आम्भीक जैसे नहीं होंगे।

१- चन्द्रगुप्त पृ० ७७

२- " पृ० ७

३- " पृ० ५०

४- " पृ० १७७

ने इसकी मानव प्रतिष्ठा और रक्षा के लिए तिल तिल कट जाये। स्मरण रहे, भवनों की विजय वाहिनी के वाङ्मय को प्रविवर्तन बनाने वाले यही भारत सन्तान होंगे^१। उसे विश्वास है कि भारतीय शौर्य से पराभूत दस्युदल बरसाती बाद के समान नष्टित जायेंगे^२।

वैतराष्ट्रीय स्कन्ध की भावना

प्रसाद ने 'चन्द्रगुप्त' नाटक में चन्द्रगुप्त तथा यवन कन्या कार्नेलिया ने विवाह सम्बन्ध स्थापित कर वैतराष्ट्रीय स्कन्ध तथा विश्व मैत्री की भावना को सुदृढ़ता प्रदान की है। 'मालव मागध' में जिस प्रान्तीयता की गंध मिलती है, ब्राह्मण बौद्ध में जो कट्टर साम्प्रदायिकता लक्षित होती है, उन पर प्रसाद का तीखा प्रहार उनके नवीन दृष्टिकोण का प्रतीक है। प्रसाद ने अपने नाटकों में गांधीवादी सिद्धान्तों के अनुरूप विश्व स्कन्ध का सर्वत्र प्रतिपादन किया है।

भारतीय गणतन्त्र का समर्थन

भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय चेतना का परम्परागत आधार राजतन्त्र रहा है। प्रसाद के नाटकों में राजतन्त्र का निन्दा है, एक सीमा तक समर्थन भी। किन्तु उसमें ताना शाही, अत्याचार या अविचार का बहिष्कार किया गया है, 'स्वेच्छाचारी शासन का परिणाम हमने स्वयं देखा लिया है, अब मैत्रि परिणत की सम्मति से मगध और वायवर्त के कल्याण में लगे।'^४

१- चन्द्रगुप्त पृ० ७७

२- ' ' पृ० ११२

३- माधुरी वाजपेयी- प्रसाद के ऐतिहासिक और संस्कृतिक नाटकों का अनुशीलन पृ० ५१

४- चन्द्रगुप्त पृ० १५७

राष्ट्रीय स्वातंत्र्य आन्दोलन में भारतीयों ने वीथी शसन से लोहा लेने के लिए गांधी जी को अपना लोकप्रिय नेता निर्वाचित किया था। प्रसाद ने नन्द के निर्झर शसन के उन्मूलन के पश्चात् यवनों के आक्रमणों से भारत को निरापद करने के लिए प्रजा की सेनापति के निर्वाचन का अधिकार दिया है। उन्होंने प्रजातंत्र के अन्तर्गत स्वतन्त्रता की सीमा भी निर्धारित की है :

“ ईश्वर ने सब मनुष्यों को स्वतन्त्र उत्पन्न किया है। किन्तु व्यक्तिगत स्वतन्त्रता वहीं तक दी जा सकती है जहाँ दूसरों की स्वतन्त्रता में बाधा न पड़े। यह राष्ट्रीय नियमों का मूल है। ” प्रसाद ने वापसि काल में एक सुदृढ़ केन्द्रीय शासन व्यवस्था का प्रस्ताव रखा है, “ उच्चाप्य के समान गणतन्त्र की योग्यता मगध में नहीं और मगध पर विपशि की भी संभावना है--- यहाँ एक सबल और सुनियोजित शासन की आवश्यकता है। ”

प्रसाद ने मालव की वार्मि से ही एक स्वतन्त्र गणराज्य घोषित किया है। जो उनके प्रजातन्त्रात्मक दृष्टिकोण का परिचय देता है। “ स्कन्दगुप्त और चन्द्रगुप्त ” में समसामयिक जन बल तथा जनमत की वास्तविक शक्ति को पहचान कर उन्होंने जनता को एक महत्वपूर्ण निर्णयात्मक तत्व स्वीकार किया है। मविष्य के प्रति भी प्रसाद सचेष्ट थे। उनकी दूर दर्शिता निम्न उक्ति से प्रकट होती है, “ क्या तुम नहीं देखते हो कि आगामी दिवसों में आर्यावर्त के सब स्वतन्त्र राष्ट्र एक के अन्तर दूसरे विदेशी विजेता से पद दलित होंगे। ”

प्रसाद का युद्ध सम्बन्धी दृष्टिकोण आक्रामक न होकर वारदातात्मक था जिसका उन्होंने अपने नाटकों में सर्वत्र उल्लेख

१- चन्द्रगुप्त पृ० १५७

२- “ १५६

३- “ ५१

किया है। किसी दूसरे राष्ट्र की सीमा को बलपूर्वक अनाधिकारिक भाव से हस्तगत करना वे अनुचित मानते थे तथा अपने राष्ट्र की विदेशी वातताओं से सुरक्षित रहने के लिए युद्ध की आवश्यक समझते थे। प्रारंभ में प्रसाद स्वराज्य प्राप्ति के शांतिपूर्ण साधनों (गांधीवादी सिद्धान्तों) बहिष्ता, करुणा, दामा, निवेदन में विश्वास प्रकट करते हुए प्रतीत होते हैं, किन्तु 'स्कन्दगुप्त' और 'चन्द्रगुप्त' तक जाते जाते भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में उग्र वादी दल का प्रादुर्भाव हो चुका था, जिसका यह विश्वास था कि सशस्त्र क्रांति द्वारा ही स्वराज्य प्राप्ति संभव है। भारतीय युवा वर्ग इस विचार धारा से पूर्ण प्रभावित था। प्रसाद ने 'चन्द्रगुप्त' नाटक में इस दृष्टिकोण को व्यक्त किया है, 'चाणक्यसिद्धि' देसता है, साधन चाहे कैसे ही हों।^१

निष्कर्ष

किन्तु यह निर्विवाद है कि प्रसाद की राष्ट्रीयता का स्वरूप भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों पर आधारित है। बारह सौ वर्षों के इतिहास के सबसे सुन्दर और भव्य ऐतिहासिक कालों की, भारतीय संस्कृति और उसके उच्चादर्शों की नाटकों में उतारने का प्रयास राष्ट्रीय महत्व रखता है। प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों की रचना का प्रमुख उद्देश्य भारतीय अतीत के राष्ट्रीय गौरव का प्रत्येकन है। प्रसाद ने वर्तमान के संघर्षों से भाग कर भारत की प्राचीन संस्कृति की ओर फ्लायन नहीं किया वरन् अपने नाटकों द्वारा अतीत के पक्ष पर एक स्वतन्त्र और संगठित राष्ट्र योजना की रचना का प्रयास किया। उनकी राष्ट्रीयता संकीर्ण न होकर सर्वभूत हित कायना तथा विश्व मैत्री से सम्पृक्त है।

१- चन्द्रगुप्त पृ० ६७

२- माधुरी बाजपेयी- प्रसाद के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक नाटकों का अनुशीलन पृ० ११७

३- ,,

पृ० ११७

कतीत के गौरवपूर्ण इतिवृत्त को प्रत्यक्ष करने का कार्य पुनरुत्थान का प्रेरक है, विशेषकर ऐसे देशों में जिनका कतीत गौरवपूर्ण रहा है, पुनरुत्थान की चेतना अवश्यम्भावी है।

कतीत प्रेम, प्राचीन गौरव की नवीन अवतारणा इतिहास प्रेम, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियों का पुनर्स्थापन तथा नवीन जीवन तत्त्वों का सन्निवेश पुनरुत्थान की प्रमुख विशेषताएँ हैं। वस्तुतः कतीत में जाकर पर्यवसित होने, कतीत को पुनर्जीवित करने तथा प्रेरणा ग्रहण करने में अन्तर है। इस कार्य में प्रसाद पुनरुत्थानवादी नहीं, आधुनिकतावादी है। प्रसाद इतिहास के माध्यम से लोहें हुई राष्ट्रीय चेतना का पुनरुत्थान करना चाहते थे। उनका विश्वास था कि इतिहास का पुनर्जागरण राष्ट्रीय उत्थान की दिशा में पूर्ण सहायक है। वे युग द्रष्टा साहित्यकार थे। नाटकों के लिए उन्होंने भारतीय संस्कृति के चरमोत्कर्ष युग का निर्वाचन किया, किन्तु आधुनिक जीवन के प्रति वास्था भाव ने उन्हें पुनरुत्थानवादी होने से बचा लिया।

इस प्रकार प्रसाद का नाट्य साहित्य एक उदात्त राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित है। उन्होंने राष्ट्रीयता का भव्य स्वरूप चित्रित कर भावी राष्ट्रीय जीवन के लिए उन्नति पथ प्रस्तुत करने का शताब्दीय कार्य किया है।

उपसंहार

पार्श्वात्य वालीचक डा० लीविस ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'न्यू बियरिंग्स ऑन ऐंगलिश पीछ्ट्री' में एक स्थान पर लिखा है :

“ जो साहित्यकार अपने देश के किसी विशेष युग में सबसे प्रभुस चेतना बिन्दु के प्रति जितना सज्ज रहेंगा वह अपने युग का उतना ही बड़ा कलाकार होगा । ”

स्पष्ट है कि बीसवीं शताब्दी का प्रभुस चेतना बिन्दु भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन था, जिसे प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक नाटकों में कहीं विस्मृत नहीं किया । इस दृष्टि से वे युग द्रष्टा साहित्यकार की संज्ञा से सम्मानित किए जाने के पूर्ण अधिकारी हैं, क्योंकि तत्कालीन राष्ट्रीयता की पूर्ण अभिव्यक्ति प्रसाद के समान किसी अन्य नाटककार में उपलब्ध नहीं होती । वे एक नए साहित्य युग के निर्माता ही नहीं, अपितु एक नई रचना शैली और नव्य दर्शन के उद्भावक भी हैं। उनके नाटक साहित्य में तत्कालीन राष्ट्रीय प्रातिशीलता प्रचुर मात्रा में प्रतिबिम्बित होती है। “ यदि सम्पूर्ण नाटकों में वर्णित राजनीतिक स्थिति को एक क्रम में रस दें तो स्पष्ट ज्ञात हो जाएगा कि किस प्रकार कार्य जाति अपने राजनीतिक अभ्युत्थान के लिए निरन्तर उषाग शील बनी रही है। ”

प्रसाद ने प्राचीन भारतीय संस्कृति का गुणगान करते हुए विभिन्न धर्मों तथा मत मतान्तरों में समन्वय स्थापित करने का अभिनन्दनीय प्रयास किया है। उनके नाटकों में राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति

१- साहित्य संदेश- नवम्बर दिसम्बर १९६६ पृ० १५७

२- पं० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा- प्रसादके नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन पृ० २७०

के साथ विश्वमैत्री, करुणा तथा मानवतावादी दृष्टिकोण भी परिलक्षित होता है। धर्म के नीचे में समन्वय तथा सहिष्णुता ही प्रसाद के नाटकों में व्यक्त विचार धारा का सार है। उनकी ऐतिहासिक नाट्य रचनाएँ गहन वाध्यात्मिक वाकेश तथा ज्वलन्त देश भक्ति के कारण अद्वितीय हैं, विशेष रूप से स्कन्दगुप्त तथा चन्द्रगुप्त नाटकों में राष्ट्रीयता की भावना का घनीभूत स्फुरण हुआ है।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप विभिन्न राजनैतिक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के उतार चढ़ाव के अनुरूप प्रातिशील रहा है। वस्तुतः भारतवर्ष की राष्ट्रीयता का इतिहास उत्थान पतन मय राष्ट्रीय जीवन का ही इतिहास है, जिसकी छाप प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों में अंकित है। अतीत के गर्भ में विलीन शताब्दियों पूर्व भारत का उज्ज्वल इतिहास प्रस्तुत करना साधारण प्रतिभाशाली, तार्किक तथा गवेषणात्मक मस्तिष्क के लिए ही संभव है। साधारणतया उनकी ऐसी कोई नाट्य कृति नहीं, जिसमें भारतीय अतीतके गौरव की गाथा न हो। प्रसाद के नाटकों में से यदि ऐतिहासिक तत्व हटा दिया जाए तो उसमें सम्सामयिक राष्ट्रीय स्वार्थन्य आन्दोलन का निम्न शेष रह जाता है।

प्रसाद की सांस्कृतिक चेतना का मूल आधार जातीय गौरव और महान् अतीत की भावना का उदय है। उनकी सांस्कृतिक चेतना समन्वित राष्ट्रीय विचारधारा गांधी के सर्वधर्म समभाव सिद्धान्त, रवीन्द्र की अन्तराष्ट्रीयता तथा विश्वमैत्री, तथा अरविन्द की वाध्यात्मिक राष्ट्रीय भावना के अनुरूप है। प्रसाद की राष्ट्रीयता में संकीर्णता की स्थान नहीं मिला है। उनकी राष्ट्रीयता महात्मा गांधी की राष्ट्रीयता के सदृश विशाल है, जिसका मुलाधार वास्तविकता और बाह्य रूप देश सेवा है।

प्रसाद युगीन राजनैतिक चेतना सामाजिक तथा सांस्कृतिक चेतना से भी जागे बढ़ गई थी क्योंकि यह निश्चित होगया था कि सभी सामाजिक, वार्थिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक विषमताओं का एक मात्र कारण विदेशी शासन है।

प्रसाद ने प्राचीन के माध्यम से नवीन की ग्रहण करने का सतत प्रयत्न किया है। वाधुनिक साम्यवादी दृष्टिकोण में उनके नाटकों में परिलक्षित होता है, “^१ बन्ध पर स्वत्व है भूतों का और धन पर स्वत्व है देशवासियों का।” भगवान् बुद्ध ने पशु-कीट-पक्षी से लेकर इन्द्र तक के साम्यवाद की श्रृंखला ध्वनि की थी। प्रसाद भारतीय संस्कृति के अनुरूप विश्व मैत्री विश्व शांति तथा मानवतावाद के समर्थक थे।

प्रसाद ने जिस युग में अपनी नाट्य साहित्य की रचना की वह युग अभूतपूर्व क्रियाशीलता और प्राचीन मूल्यों एवं मान्यताओं के नवीन वैज्ञानिक अध्ययन के प्रकाश में, परीक्षा का समय था।^२ वाधुनिक भारतीय इतिहास के एक निर्णायक समय में उनके राष्ट्रीय विचारों का अनुशीलन भारत की वर्तमान राजनैतिक तथा सामाजिक समस्याओं का समाधान ढूँढने के लिए प्रेरक व सार्थक सिद्ध हो सकता है।

१- स्कन्दगुप्त पृ० १४८

२- डा० लक्ष्मीशानर वाष्णीय- बीसवीं शताब्दी हिन्दी साहित्य : नए सन्दर्भ पृ० २३४

सहायक ग्रंथ सूची

प्रसुत नाटक	संस्करण
१- वजातस्तु	२०१३ वि०
२- कामना	२०१३ वि०
३- चन्द्रगुप्त	२०११ वि०
४- जनमेजय का नागयज्ञ	-
५- ध्रुवस्वामिनी	२०१५ वि०
६- विशास	२०२२ वि०
७- स्कन्दगुप्त	२०१३ वि०
८- राज्यकी	२०१३ वि०

बालीचनात्मक पुस्तक सूची

- हिन्दी कविता में युगान्तर- डा० सुधीन्द्र , १९५०
 राष्ट्रधर्म- सत्यदेव विधालेकार
 भारतीय राष्ट्रीयता का अग्रदूत , डा० कर्णसिंह , १९७०
 आधुनिक हिन्दी काव्य शिल्प, डा० मोहन अवस्थी, १९६३
 राष्ट्रभाषा की समस्या - डा० रामविलास शर्मा
 राष्ट्र भाषा और राष्ट्रीय स्मृति- श्री रामधारी सिंह दिनकर १९५६
 राष्ट्रीयता और समाजवाद - वाचार्य नरेन्द्र देव , २००६ वि०
 भारत का संवैधानिक एवं राष्ट्रीय विकास, गुरुमुख निहाल सिंह
 बीसवीं शताब्दी हिन्दी साहित्य : नए सन्धर्भ , डा० लक्ष्मी सागर
 वाष्णीय , १९६६

- भारतेन्दुकालीन नाटक साहित्य- डा० गोपी नाथ तिवारी, १९५६
 भारतेन्दु युग- डा० रामविलास शर्मा, १९५६
 हिन्दी नाटक उद्भव एवं विकास, डा० वल्लभ चौधरी, २०९३ वि०
 प्रसाद नाट्य और रंग शिल्प, गोविन्द चातक, १९६६
 वाधुनिक हिन्दी नाटक, डा० नगेन्द्र, १९५५
 प्रसादयुगीन हिन्दी नाटक, डा० मणवती प्रसाद शुक्ल, १९७९
 प्रसाद के नाटक, डा० रामरत्न भटनागर, १९५९
 हिन्दी नाटक साहित्य, ब्रजराजदास
 प्रसाद का नाट्य साहित्य परम्परा एवं प्रयोग, डा० हरिन्द्र प्र० सी०
 प्रसाद के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक नाटकों का अनुशीलन - माधुरी वाजपेयी
 प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन- पी० जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, १९४३

अंग्रेजी पुस्तक सूची

- सोशल बैकग्राउण्ड वाफ इंडियन नेशनलिज्म, ए० वार० देसाई
 स्ट्रगल फॉर फ्रीडम- वार० सी० मजूमदार, स्कॉटल वाल्यूम
 पोलिटिकल सांस्करण्ड कंस्टीट्यूशनल ला - जे० डब्ल्यू० वर्मिस
 मार्क्सिज्म एण्ड दि कंसेप्शन वाफ नेशनलिटीज- स्टातिन
 कामनसेन्स एबाउट इंडिया - के० एम० पणिकर
 इंडीया वाफ इंडियन नेशनलिज्म, पी० सीतारामैया
 इंडिया टु डे- वार० पी० क